गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 231
दि. 22.12.2025,
सोमवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH Regd. Office: TF-01, Nanakram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.

Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

मेट्रो से मिलेगी राहत की सांस, प्रदूषण के खिलाफ दिल्ली सरकार का सबसे बड़ा दांव

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली और एनसीआर में लगातार गंभीर होते वायु प्रदूषण के बीच दिल्ली सरकार ने सार्वजनिक परिवहन को प्रदूषण नियंत्रण की धुरी बनाते हुए बड़ा और निर्णायक कदम उठाया है। सरकार का साफ मानना है कि जब तक निजी वाहनों पर निर्भरता कम नहीं होगी, तब तक प्रदूषण पर प्रभावी लगाम लगाना संभव नहीं है। इसी सोच के तहत दिल्ली मेट्रो नेटवर्क के विस्तार और परिवहन ढांचे को मजबूत करने के लिए परिवहन बजट में ऐतिहासिक बढ़ोतरी की गई है, जिसे सरकार आने वाले वर्षों के लिए गेमचेंजर मान रही है।

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने बताया कि वर्ष 2025-26 के बजट में परिवहन विभाग के लिए 9,110 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है, जो पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 60 प्रतिशत अधिक है। उन्होंने कहा कि यह बढ़ोतरी सिर्फ कागज़ी आंकड़ा नहीं है, बल्कि यह राजधानी की जीवनरेखा माने जाने वाले सार्वजनिक परिवहन, विशेषकर मेट्रो, को लेकर सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। सरकार ने अकेले दिल्ली मेट्रो परियोजनाओं के लिए 2,929 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं, जबकि पिछले वर्ष यह राशि करीब 500 करोड़ रुपये ही थी। मुख्यमंत्री ने भरोसा दिलाया कि इस बढ़े हुए आवंटन से न केवल नई परियोजनाओं को गति मिलेगी, बल्कि चल रही परियोजनाओं में भी किसी तरह की वित्तीय बाधा नहीं आने दी जाएगी।

दिल्ली कैबिनेट ने मेट्रो रेल ट्रांजिट सिस्टम के फेज-IV के तहत तीन महत्वपूर्ण कॉरिडोर—लाजपत नगर से साकेत, इंद्रलोक से इंद्रप्रस्थ और रिठाला से कुंडली—को मंजूरी दे दी है। इन कॉरिडोरों के पूरा होने से दिल्ली के कई घनी आबादी वाले इलाकों के साथ-साथ एनसीआर के क्षेत्रों की कनेक्टिविटी में भी बड़ा सुधार होगा। सरकार का मानना है कि बेहतर कनेक्टिविटी से लाखों लोग रोज़मर्रा की आवाजाही के लिए निजी वाहनों की बजाय मेट्रो को अपनाएंगे, जिससे सड़कों पर ट्रैफिक का दबाव घटेगा और प्रदूषण में स्वाभाविक कमी आएगी।

मुख्यमंत्री ने यह भी स्पष्ट किया कि दिल्ली सरकार मेट्रो के फेज-I, फेज-II और फेज-III से जुड़ी लगभग 2,700 करोड़ रुपये की पुरानी देनदारियों को भी चुकाने के लिए प्रतिबद्ध है। चालू वित्त वर्ष में ही 940 करोड़ रुपये पहले ही जारी किए जा चुके हैं, ताकि दिल्ली मेट्रो की वित्तीय स्थिति मजबूत बनी रहे और भविष्य की परियोजनाओं में किसी तरह की रुकावट न आए। सरकार का उद्देश्य मेट्रो नेटवर्क को दीर्घकालिक और टिकाऊ बनाना है, ताकि यह आने वाले दशकों तक दिल्ली की परिवहन जरूरतों को पूरा कर सके।

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट और अन्य शोध संस्थानों की रिपोर्ट साफ तौर पर बताती हैं कि दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण की सबसे बड़ी वजह वाहनों से निकलने वाला धुआं है। ऐसे में सार्वजनिक परिवहन को मजबूत करना केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि मजबूरी बन चुका है। सरकार का लक्ष्य मेट्रो नेटवर्क को इतना व्यापक और सुविधाजनक बनाना है कि लोगों को निजी वाहन निकालने की आवश्यकता ही महसूस न हो। इसके लिए लास्ट माइल कनेक्टिविटी, बस-मेट्रो समन्वय और समयबद्ध क्रियान्वयन पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

सरकार इस पूरी पहल को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'नेट जीरो एमिशन' के विजन से जोड़कर देख रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली सरकार मिशन मोड में काम कर रही है, ताकि राजधानी को एक पर्यावरण-अनुकूल और टिकाऊ परिवहन मॉडल की ओर ले जाया जा सके। उनका कहना है कि आज लिए गए फैसले आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ हवा और बेहतर जीवन की नींव रखेंगे। मेट्रो विस्तार और परिवहन बजट में भारी निवेश के जरिए दिल्ली सरकार ने यह संकेत दे दिया है कि प्रदूषण के खिलाफ लड़ाई अब सिर्फ चेतावनियों और प्रतिबंधों तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि मजबूत बुनियादी ढांचे के सहारे निर्णायक रूप लेगी।

धर्म सत्ता से ऊपर है, राजनीतिक स्वार्थों से दूर रहना ही समाज के हित में—बंगाल में मोहन भागवत का बड़ा संदेश

कोलकाता। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत ने अपने बंगाल दौरे के दौरान धर्म, सत्ता और राजनीति के रिश्ते पर खुलकर बात करते हुए कहा कि सरकारें और राजनीतिक व्यवस्थाएं समय के साथ बदलती रहती हैं, लेकिन धर्म स्थायी होता है और वही समाज की आत्मा है। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि बाबरी मस्जिद से जुड़ा विवाद मूल रूप से राजनीतिक था और इसे न तो हिंदुओं के वास्तविक हितों से जोड़ा जाना चाहिए और न ही मुसलमानों के। उनके अनुसार, ऐसे मुद्दों को बार-बार उछालने का उद्देश्य केवल चुनावी लाभ और वोट बैंक की राजनीति है, जिसका समाज की एकता और सौहार्द से कोई लेना-देना नहीं है।

मोहन भागवत ने कहा कि मंदिर–मस्जिद जैसे विवादों पर देश की सर्वोच्च अदालत अपना फैसला सुना चुकी है और उसके बाद इन विषयों को राजनीतिक मंचों पर दोहराना समाज के लिए नुकसानदेह है। उन्होंने चेतावनी दी कि अतीत के विवादों को जीवित रखकर वर्तमान और भविष्य को

अस्थिर करने की कोशिश की जा रही है, जो किसी भी दृष्टि से राष्ट्रहित में नहीं है। भागवत ने यह भी कहा कि धार्मिक स्थलों की सुरक्षा की जिम्मेदारी सरकार निभा सकती है, लेकिन उनके संचालन और रखरखाव में सरकारी धन का उपयोग करना न केवल गलत है, बल्कि कानून की भावना के भी खिलाफ है। धर्म को राजनीति और सत्ता से अलग रखना ही स्वस्थ लोकतंत्र की पहचान है। अपने संबोधन में संघ प्रमुख ने पश्चिम बंगाल की सामाजिक स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि यहां कट्टरपंथी सोच का विस्तार हो रहा है, जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। उन्होंने सीमावर्ती इलाकों से अवैध घुसपैठ का मुद्दा उठाते हुए कहा कि इससे न केवल जनसांख्यिकीय संतुलन प्रभावित होता है, बल्कि सामाजिक तनाव भी बढ़ता है। भागवत ने दो टूक कहा कि हिंदुओं के लिए भारत ही एकमात्र देश है, इसलिए यहां की सांस्कृतिक और सामाजिक सुरक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे कथित अत्याचारों का जिक्र करते हुए वैश्विक हिंदू समाज से एकजुट होकर मदद और समर्थन की अपील की।

मोहन भागवत ने यह भी स्पष्ट किया कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ किसी धर्म विशेष के खिलाफ नहीं है। उन्होंने कहा कि आरएसएस मुस्लिम विरोधी संगठन नहीं, बल्कि राष्ट्रवादी संगठन है, जो भारत की एकता, संस्कृति और मूल्यों की रक्षा के लिए काम करता है। हिंदू राष्ट्र की अवधारणा पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि इसका अर्थ किसी पर धर्म थोपना नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक पहचान को स्वीकार करना है, जिसकी जड़ें हिंदुत्व में हैं और जिसने सदियों से विविधता में एकता की भावना को मजबूत किया है। मदरसा शिक्षा को लेकर भागवत ने कहा कि समय की मांग है कि शिक्षा व्यवस्था आधुनिक, व्यावहारिक और राष्ट्रवादी मूल्यों से जुड़ी हो। उन्होंने असम सरकार द्वारा मदरसों से जुड़े फैसलों का समर्थन करते हुए कहा कि शिक्षा का उद्देश्य बच्चों को मुख्यधारा से जोड़ना, उन्हें आत्मनिर्भर बनाना और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदार नागरिक तैयार करना होना चाहिए। उन्होंने जोर देकर कहा कि किसी भी समुदाय का विकास तब ही संभव है, जब उसकी शिक्षा व्यवस्था आधुनिक जरूरतों के अनुरूप हो और समाज को आगे बढ़ाने में सहायक बने। बंगाल दौरे के दौरान दिए गए मोहन भागवत के ये बयान न केवल धार्मिक और सामाजिक विमर्श को नई दिशा देने वाले माने जा रहे हैं, बल्कि यह भी संकेत देते हैं कि संघ नेतृत्व धर्म और राजनीति के बीच संतुलन बनाए रखने और समाज में अनावश्यक टकराव से बचने की पैरवी कर रहा है।

अमेरिका की सुरक्षा पर इस्लामी उग्रवाद की गहरी छाया राष्ट्रीय खुफिया निदेशक तुलसी गबार्ड की कड़ी चेतावनी

वाशिंगटन। संयुक्त राज्य अमेरिका की राष्ट्रीय खुफिया निदेशक तुलसी गबार्ड ने इस्लामी आतंकवाद और कट्टरपंथी इस्लामी विचारधारा को अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा बताते हुए तीखी और स्पष्ट चेतावनी दी है। उन्होंने कहा कि यह खतरा केवल हिंसक आतंकी हमलों तक सीमित नहीं है, बल्कि एक गहरी वैचारिक चुनौती के रूप में पश्चिमी सभ्यता की जड़ों को कमजोर करने की कोशिश कर रहा है। तुलसी गबार्ड ने कहा कि इस्लामी उग्रवाद अब पारंपरिक सीमाओं से निकलकर डिजिटल दुनिया और सामाजिक ताने-बाने में प्रवेश कर चुका है, जिससे इसका प्रभाव और अधिक व्यापक व खतरनाक हो गया है। अमेरिका महोत्सव को 20 दिसंबर को संबोधित करते हुए गबार्ड ने कहा कि इस्लामी आतंकवाद और इस्लामवादी विचारधारा दोनों ही अमेरिका के मूल्यों, लोकतांत्रिक व्यवस्था और राष्ट्रीय एकता के लिए गंभीर चुनौती हैं। अमेरिका के सार्वजनिक प्रसारण नेटवर्क सी-एसपीएएन की वेबसाइट पर जारी रिपोर्ट के अनुसार, उन्होंने कहा कि आज यह उग्रवादी सोच इंटरनेट और सोशल मीडिया के माध्यम

से युवाओं तक आसानी से पहुंच रही है, जिससे कट्टरपंथीकरण की प्रक्रिया तेज हो गई है। उन्होंने इसे एक वैचारिक युद्ध करार देते हुए कहा कि इसका सामना केवल सैन्य या सुरक्षा उपायों से नहीं, बल्कि सख्त वैचारिक और सामाजिक रणनीति से करना होगा।

तुलसी गबार्ड ने अपने संबोधन में इस बात पर भी चिंता जताई कि पश्चिमी देशों में धार्मिक आयोजनों और परंपराओं पर इस विचारधारा का डर साफ दिखाई देने लगा है। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि जर्मनी में कई जगहों पर क्रिसमस बाजार रद्द किए जा रहे हैं, जो इस बात का संकेत है कि उग्रवाद का भय अब सार्वजनिक जीवन और सांस्कृतिक उत्सवों तक को प्रभावित कर रहा है। उन्होंने कहा कि अमेरिका भी इससे अछूता नहीं है और यहां भी इस्लामी कट्टरपंथ का प्रभाव धीरे-धीरे फैल रहा है। उन्होंने दावा किया कि मिशिगन, मिनियापोलिस और मिनेसोटा जैसे राज्यों में कुछ मौलवी खुलेआम इस्लामी कट्टरपंथी विचारधारा को बढ़ावा दे रहे हैं और युवाओं को प्रभावित कर रहे हैं। उनके अनुसार, यह केवल धार्मिक प्रचार का मामला नहीं है, बल्कि एक सुनियोजित वैचारिक अभियान है, जिसका उद्देश्य युवाओं को कट्टर बनाना और अमेरिकी समाज की मूल संरचना को चुनौती देना है। गबार्ड ने कहा कि युवाओं को निशाना बनाना इस उग्रवादी सोच की सबसे खतरनाक रणनीति है, क्योंकि इससे आने वाली पीढ़ियों की सोच और पहचान प्रभावित होती है।

राष्ट्रीय खुफिया निदेशक ने यह भी दावा किया कि इस वर्ष की शुरुआत में इस्लामिक संगठनों की एक बैठक हुई थी, जिसमें अमेरिका के कई हिस्सों में शरिया कानून लागू करने की मांग उठाई गई थी। उन्होंने कहा कि ह्यूस्टन जैसे कुछ क्षेत्रों में यह व्यवस्था पहले से ही किसी न किसी रूप में लागू की जा चुकी है। गबार्ड के अनुसार, यह खतरा किसी दूर देश का नहीं, बल्कि अमेरिका की सीमाओं के भीतर मौजूद वास्तविक चुनौती है। उन्होंने पैटरसन, न्यू जर्सी का उदाहरण देते हुए कहा कि वहां खुद को पहला मुस्लिम शहर बताने पर गर्व किया जाता है, और यह प्रवृत्ति धीरे-धीरे इस्लामी कानूनों को आम नागरिकों पर थोपने की कोशिश की ओर बढ़ रही है।

तुलसी गबार्ड ने अपने संबोधन के अंत में कहा कि अमेरिका को इस खतरे को नजरअंदाज करने की भूल नहीं करनी चाहिए। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि समय रहते इस वैचारिक और सुरक्षा चुनौती का सामना नहीं किया गया, तो यह न केवल अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा, बल्कि उसकी सांस्कृतिक पहचान और लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए भी गंभीर संकट बन सकता है। उनका कहना था कि अब वक्त आ गया है कि इस्लामी आतंकवाद और उग्रवादी विचारधारा के खिलाफ खुलकर, स्पष्ट और एकजुट होकर कार्रवाई की जाए।

पूर्वोत्तर को लेकर उकसावे की साजिश, भारत सीमा पर तुर्किये के ड्रोन-अशांत बांग्लादेश से बढ़ी सुरक्षा चुनौती

नई दिल्ली। हिंसा, राजनीतिक अस्थिरता और आंतरिक कलह से जूझ रहे बांग्लादेश में भारत विरोधी गतिविधियों का ग्राफ तेजी से ऊपर जाता दिखाई दे रहा है। हालात ऐसे बनते जा रहे हैं कि कट्टरपंथी तत्व न केवल भड़काऊ बयान दे रहे हैं, बल्कि भारत की संप्रभुता और सुरक्षा को सीधे चुनौती देने वाले कदम भी सामने आ रहे हैं। 'सेवन सिस्टर्स' यानी भारत के पूर्वोत्तर राज्यों को लेकर कब्जे जैसी धमकी भरी टिप्पणियों के बीच अब भारत-बांग्लादेश सीमा के पास तुर्किये से खरीदे गए उन्नत सैन्य ड्रोन की तैनाती ने नई दिल्ली की चिंताओं को और गहरा कर दिया है। बांग्लादेश में इंकलाब मंच के संयोजक शरीफ उस्मान हादी की मौत के बाद देश के कई हिस्सों में हिंसा और अव्यवस्था फैल गई है। इस अशांत माहौल का फायदा उठाकर कुछ कट्टरपंथी और भारत विरोधी संगठन खुलकर नफरत फैलाने में जुट गए हैं। सोशल मीडिया से लेकर सार्वजनिक मंचों तक भारत के खिलाफ उकसावे वाले बयान दिए जा रहे हैं। यहां तक कि ढाका स्थित भारतीय उच्चायोग पर हमले की धमकियां भी सामने आई हैं, जिन्हें लेकर भारत ने कड़ा रुख अपनाया है। सुरक्षा सूत्रों के अनुसार, बांग्लादेश की यूनुस सरकार ने तुर्किये से खरीदे गए अत्याधुनिक 'बेयरकतर TB-2' ड्रोन भारत की सीमा के करीब तैनात किए हैं। ये ड्रोन पिछले वर्ष खरीदे गए थे और इन्हें हासिल करने में पाकिस्तान की कथित मध्यस्थता की भूमिका भी बताई जा रही है। सत्ता परिवर्तन के बाद ढाका और इस्लामाबाद के बीच बढ़ती नजदीकियों के संदर्भ में इस घटनाक्रम को बेहद संवेदनशील माना जा रहा है। हाल के दिनों में इन तुर्की ड्रोन की गतिविधियां भारतीय सीमा के बेहद नजदीक देखी गई हैं, जिस पर सीमा सुरक्षा बल ने कई बार सतर्कता अलर्ट जारी किए हैं। इससे पहले भी पश्चिम बंगाल, असम और त्रिपुरा से सटे सीमावर्ती इलाकों में बांग्लादेशी ड्रोन की मौजूदगी दर्ज की जा चुकी है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि यह कोई एक-दो दिन की घटना नहीं, बल्कि सुनियोजित रणनीति का हिस्सा हो सकती है। बांग्लादेश की आंतरिक अशांति और सीमा पर बढ़ती संदिग्ध गतिविधियों को देखते हुए भारत ने पूर्वी सीमाओं पर चौकसी अभूतपूर्व स्तर तक बढ़ा दी है। त्रिपुरा, असम और पश्चिम बंगाल में बीएसएफ और सेना की अतिरिक्त टुकड़ियों की तैनाती की गई है। अंतरराष्ट्रीय सीमा पर तकनीकी निगरानी के साथ-साथ मानवीय गश्त भी तेज कर दी गई है। भारतीय सेना की पूर्वी कमान के वरिष्ठ सैन्य और अर्धसैनिक अधिकारियों के एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने दक्षिण त्रिपुरा के संवेदनशील सीमावर्ती क्षेत्रों का दौरा कर जमीनी हालात का आकलन किया और सुरक्षा तैयारियों की समीक्षा की है। विक्ट्री डे से पहले बांग्लादेश के कुछ नेताओं और कट्टरपंथी समूहों द्वारा दिए गए भड़काऊ बयानों, खासतौर पर 'सेवन सिस्टर्स' पर कब्जे की टिप्पणी, को भारत ने बेहद गंभीरता से लिया है। नई दिल्ली ने इस तरह के बयानों पर कड़ा विरोध दर्ज कराते हुए स्पष्ट किया है कि भारत अपनी क्षेत्रीय अखंडता से किसी भी प्रकार का समझौता नहीं करेगा। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए बांग्लादेश के सेना प्रमुख वकार-उज-जमान और भारतीय सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी के बीच हॉटलाइन पर सीधी बातचीत भी हुई, जिसमें सीमा सुरक्षा और हालिया घटनाक्रमों पर चर्चा की गई। इसके साथ ही दिल्ली में स्थित बांग्लादेश उच्चायोग के बाहर सुरक्षा व्यवस्था और कड़ी कर दी गई है, ताकि किसी भी अप्रिय घटना को रोका जा सके। भारत सरकार पूरे घटनाक्रम पर लगातार नजर बनाए हुए है और साफ संकेत दे चुकी है कि उकसावे, धमकी या सैन्य दबाव की किसी भी कोशिश का जवाब कूटनीतिक, रणनीतिक और सुरक्षा स्तर पर मजबूती से दिया जाएगा।

'कुछ सेक्युलर गाओ' की धमकी से मंच पर हंगामा 'जागो मां' गाने पर बंगाल में उभरा बड़ा विवाद

कोलकाता। पश्चिम बंगाल के पूर्व मेदिनीपुर जिले में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम उस समय गंभीर विवाद में बदल गया, जब लोकप्रिय बंगाली गायिका लाग्नजिता चक्रवर्ती के साथ मंच पर कथित बदसलूकी और धमकी की घटना सामने आई। भगवानपुर इलाके के एक स्कूल परिसर में शुक्रवार शाम आयोजित इस कार्यक्रम में माहौल तब तनावपूर्ण हो गया, जब गायिका द्वारा 'जागो मां' गीत प्रस्तुत किए जाने के बाद एक स्थानीय व्यक्ति मंच पर चढ़ आया और कथित तौर पर उनसे 'सेक्युलर' गीत गाने की मांग करने लगा। आरोप है कि व्यक्ति ने सार्वजनिक रूप से न केवल कार्यक्रम में व्यवधान डाला, बल्कि महिला कलाकार को नुकसान पहुंचाने की धमकी भी दी और शारीरिक हमला करने की कोशिश की।

लाग्नजिता चक्रवर्ती ने इस संबंध में पुलिस में लिखित शिकायत दर्ज कराते हुए बताया कि वह अपना गीत पूरा कर अगला गीत शुरू करने ही वाली थीं, तभी महबूब मलिक नाम का व्यक्ति अचानक मंच पर आ गया। गायिका के अनुसार, आरोपी आक्रामक लहजे में उनसे बहस करने लगा और कार्यक्रम को रोकने की कोशिश की। उन्होंने कहा कि मंच पर हुई पूरी घटना स्कूल में लगे सीसीटीवी कैमरों में रिकॉर्ड हुई है और आयोजकों द्वारा भी कार्यक्रम की वीडियो रिकॉर्डिंग की गई है। गायिका ने मांग की है कि इन सभी फुटेज को सुरक्षित किया जाए और एक महिला कलाकार के साथ सार्वजनिक मंच पर हुई बदसलूकी को गंभीर अपराध मानते हुए सख्त कार्रवाई की जाए।

घटना सामने आने के बाद यह मामला केवल सांस्कृतिक कार्यक्रम तक सीमित नहीं रहा, बल्कि राजनीतिक रंग भी लेता चला गया। भारतीय जनता पार्टी ने आरोप लगाया कि महबूब मलिक सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस से जुड़ा स्थानीय नेता है और उसे राजनीतिक संरक्षण प्राप्त है। भाजपा नेता शंकुदेब पांडा ने दावा किया कि घटना के बाद गायिका और उनकी टीम में भय का माहौल बन गया, जिसके चलते उन्हें कार्यक्रम के तुरंत बाद देर रात कोलकाता लौटना पड़ा। उन्होंने यह आरोप भी लगाया कि शुरुआती स्तर पर पुलिस ने मामले को गंभीरता से लेने के बजाय माफी मांगकर सुलझाने की कोशिश की, जिससे कलाकारों में और असुरक्षा की भावना पैदा हुई। पुलिस प्रशासन ने हालांकि इन आरोपों के बीच कार्रवाई का भरोसा दिलाया है। ईस्ट मिदनापुर के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक मिथुन डे ने पुष्टि की है कि इस मामले में प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है और आरोपी की गिरफ्तारी के लिए लगातार छापेमारी की जा रही है।

संपादकीय

200 वर्ल्ड लीडर्स का सेक्स स्कैंडल, भारत के किन बड़े नेताओं का नाम? US की सीक्रेट फाइल से हड़कंप मचना तय

यह कहानी डोनाल्ड ट्रंप के किसी सेक्स स्कैंडल की नहीं है। यह कहानी उस पावर स्कैंडल की है जो धोखे, ब्लैकमेल और बच्चियों की यौन शोषण की उस गंदी और डरावनी दुनिया से जुड़ा है। जहां पर राष्ट्रपति, उद्योगपति, नामीगिनामी सेलिब्रिटीज, कलाकार और बड़े बिजनेसमैन, ताकतवर लोग शामिल बताए जाते हैं। यह डोन्ड ट्रंप का वह पावर स्कैंडल है जिसे महीनों तक टालने, दबाने, रोकने के लिए राष्ट्रपति ट्रंप ने एड़ी चोटी का जोर लगा लिया। क्योंकि जवानी के दिनों में किए गए कांड की शर्मिंदगीगी से ज्यादा उनकी कुर्सी हिलने और उनके चरित्र के बुरी तरह एक्सपोज होने का मामला था। सेक्स स्कैंडल केवल बदनामी लाता है। लेकिन पावर स्कैंडल सिस्टम को बेनकाब करता है। जेफरी एपस्टीन ये शख्स वैसे तो कब्र में दफन हो चुका है पर एपस्टीन के कारनामे उसे हर दो-चार महीनों में कब्र से बाहर खींची लाते हैं। फिर एक बार अमेरिका की हाउस ओवरसाइड कमेटी के डेमोक्रेट्स ने एप्सन से जुड़ी फोटोस रिलीज़ की है। फोटो में अमेरिका के कई बड़े नाम बिल गेट्स, वडी एलन, डेविड ब्रुक्स साथ ही हैं कुछ मैसेजेस जिनमें एक लड़की को $000 पर बेचने की बात कही गई है। खास बात यह है कि ट्रंप प्रशासन 19 दिसंबर को पूरीन फाइल्स रिलीज़ करने वाला था। अब तक फाइल्स को रिलीज़ करने को लेकर कोई भी अपडेट सामने नहीं आया है। एस्टीन वो कन्विक्टेड सेक्स ऑफेंडर था जिसने न्यूयॉर्क की जेल में फांसी लगाकर अपनी जान दे दी। इसके बाद डेमोक्रेट्स की ओवरसाइड कमेटी ने एप्सन के स्टेट से 95,000 से ज्यादा फोटो सीज की। इन्हीं फोटो को समय-समय पर रिलीज कर दिया जाता है। अब की बार रिलीज हुई 68 फोटो में कई नामी चेहरे हैं। फोटो में माइक्रोसॉफ्ट के फाउंडर बिल गेट्स की एक फोटो है। जहां वो एक औरत के साथ पोज़ दे रहे हैं। लेकिन उस औरत का फेस ब्लर कर दिया गया है। फिर फोटो आया है नोआम चोमस्की का। फेमस अमेरिकन फिलॉसफर। उनकी एप्सन के साथ प्लेन में बैठे हुए एक फोटो है और पहले भी कई रिपोर्ट्स आई थी कि गेट्स और चम्स के एपस्टीन को जानते थे। गेट्स ने तब कहा था कि एपस्टीन से मिलना उनकी सबसे बड़ी मिस्टेक थी और इसके अलावा अमेरिकन डायरेक्टर वडी एलन ट्रंप के पुराने एडवाइजर जो रहे हैं स्टीव बेनन की भी कई फोटो सामने आई हैं। न्यूयॉर्क टाइम्स के लिए कॉलम लिखने वाले डेविड ब्रुक्स भी इस फहरिस्त में शामिल हैं। न्यूयॉर्क टाइम्स के स्पोक्सपर्सन ने ही गार्डियन को स्टेटमेंट दिया है कि ब्रुक्स एक जर्नलिस्ट हैं और अक्सर इवेंट्स में जाते रहते हैं बिजनेसमैनस के लिए और लीडर से बात करने के लिए और ये फोटो 2011 के डिनर की थी जहां बहुत सारे लोग थे। उससे पहले या बाद में ब्रुक्स का एस्टीन से कोई कांटेक्ट नहीं था और यह बात भी सच है कि इन फोटो में सिर्फ इन लोगों का दिखना कोई गलत काम का प्रूफ नहीं है क्योंकि फोटो में किसी तरह का कॉन्टेक्स्ट नहीं दिया गया है। ये तो हुई उन फोटो की बात जिनमें अमेरिका की जानीमानी हस्तियां हैं। इसके अलावा कुछ फोटो में औरतों के बॉडी पार्ट्स पर कुछ लाइंस लिखी हुई दिख रही हैं। ये लाइंस लोलिता नाम की एक नवेल से इंस्पायर्ड हैं। ललिता 1955 में लिखी गई थी एक नवेल। कहानी में एक पीडोफाइल प्रोफेसर एक 12 साल की बच्ची को सेक्सुअली अब्यूज करता है। इस नवेल का एस्टीन से कोई और कनेक्शन भी है।

लोग उस घेरे में तो जरूर आएंगे जो उन पार्टीज में गए। दो तरह का काम वह कर रहा है। पॉलिटिकल लीडर्स को आपस में मिलवाना, डिप्लोमेट्स को आपस में मिलवाना, डील्स क्रैक करना, आर्म्स डील्स क्रैक करना ये सारी चीजें जो अमेरिका में अलाउड है इललीगल नहीं है। जिसको लॉबी कहते हैं। हिंदुस्तान में वो दलाली कहलाता है। वहां लॉबिंग उस तरह के काम को वहां पे लीगलाइज वहां पे सिस्टम बना हुआ है। तो वह एक काम अलग कि नेताओं को नेताओं से मिलाना, इंडस्ट्रिलिस्ट को नेताओं से मिलाना, सरकार से सरकार डिप्लोमा वो सेटिंग एक अलग काम है। बहरहाल, एप्स्टीन फाइल्स को लेकर भारत में भी काफ़ी उत्सुकता है। भारत में बीजेपी नेता सुब्रह्मण्यम स्वामी समेत कई अन्य नेताओं ने दावा किया है कि एपस्टीन फाइल्स भारतीय राजनीति में भी धमाका करेगी। नवंबर में जारी एपस्टीन फाइल्स से जुड़े दस्तावेज़ों में प्रधानमंत्री मोदी, केंद्रीय मंत्री हरदीप पुरी और उद्योगपति अनिल अंबानी के नाम हैं। लेकिन इनका संदर्भ मुलाक़ात करने या कराने से है। अभी तक कोई ऐसी बात नहीं आयी है जिससे कहा जाये कि एपस्टीन के आपराधिक कारनामों में किसी भारतीय नेता की संलिप्तता है। 2019 में, गिरफ्तारी से दो महीने पहले, एपस्टीन ने स्टीव बैनन (ट्रंप के पूर्व एडवाइजर) से मोदी से मीटिंग सेट करने की कोशिश की। ईमेल में लिखा "Modi on board", मुद्दा चीन के खिलाफ रणनीति।

मुक्त व्यापार से खुलेगी प्रगति की राह

> नए वर्ष 2026 में भारत दुनिया के प्रमुख देशों के साथ एफटीए को तेजी से आकार देने की डगर पर आगे बढ़ेगा। उम्मीद करें कि नए साल में होने वाले एफटीए भारत को निर्यात, सेवा, निवेश, तकनीकी सहयोग और पेशेवरों की आवाजाही की नई आर्थिक शक्ति बनाते हुए देश को वर्ष 2027 तक दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था और वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने की डगर पर आगे बढ़ाएंगे।

ट्रंप की टैरिफ चुनौतियों और वैश्विक व्यापार के मोर्चे पर अनिश्चितताओं के बीच भारत के निर्यात में बढ़ोतरी का रुझान दिखा है। नवंबर 2024 से नवंबर 2025 के बीच भारत का कुल निर्यात 64.05 अरब डालर से बढ़कर 73.99 अरब डालर हो गया। निर्यात में 15.52 प्रतिशत की मजबूत वृद्धि हुई है। इसके पीछे मुक्त व्यापार समझौतों यानी एफटीए की अहम भूमिका मानी जा रही है। नए वर्ष में अमेरिका, यूरोपीय संघ और कई अन्य देशों के साथ एफटीए के आकार लेने से भारत का निर्यात नई ऊंचाई पर होगा तथा भारत की व्यापार घाटे की चिंताएं कम होंगी।

इसी पृष्ठभूमि में 19 दिसंबर को केंद्रीय मंत्रिमंडल ने भारत-न्यूजीलैंड एफटीए को मंजूरी दी है। दोनों देशों ने 14 साल पहले एफटीए पर बातचीत शुरू की थी। इस एफटीए से जहां वस्तुओं और सेवाओं में व्यापार के साथ-साथ निवेश प्रवाह को बढ़ाने और आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करने में मदद मिलेगी। इससे कृषि, खाद्य प्रसंस्करण, नवीकरणीय ऊर्जा, फार्मा, शिक्षा और सेवाओं जैसे क्षेत्रों में नए अवसर बनने की भी उम्मीद है।

इससे पहले ही 18 दिसंबर को ओमान के साथ एफटीए पर हस्ताक्षर हुए हैं। इस एफटीए को आधिकारिक तौर पर समग्र आर्थिक भागीदारी समझौता (सीपा) कहा गया है।

इस एफटीए के तहत भारत के 98 प्रतिशत निर्यात को ओमान में शून्य दर पर पहुंच मिलेगी। इसमें ओमान को होने वाले 99 प्रतिशत से अधिक निर्यात शामिल हैं। इससे भारत के कपड़ा, रत्न-आभूषण, दवाई, वाहन, कृषि उत्पाद और चमड़ा उद्योग को बड़ा फायदा होने की उम्मीद है। खासतौर से भारत से करीब 3.64 अरब डालर के निर्यात पर ओमान में फिलहाल लगने वाला पांच प्रतिशत शुल्क शून्य हो जाएगा। इसके बदले में भारत ने ओमान से आने वाले विभिन्न उत्पादों पर आयात शुल्क में कमी सुनिश्चित की है। भारत ने अपनी करीब 78 प्रतिशत टैरिफ लाइन पर शुल्क में उदारता की पेशकश की है। ऐसे में मूल्य के लिहाज से ओमान से भारत में 95 प्रतिशत उत्पादों के शुल्क कम होंगे। इनमें खजूर, मार्बल और पेट्रोकेमिकल उत्पाद शामिल हैं। निश्चित रूप से इस एफटीए के तहत भारत के हित में कई अहम बातें हैं।

भारत ने घरेलू हितों की रक्षा के लिए कुछ सख्त कदम भी उठाए हैं। पेशेवर आवाजाही पर भी एफटीए में भारत के हित हैं। पहली बार ओमान ने भारतीय पेशेवरों की आवाजाही पर व्यापक रियायतें दी हैं। 'इंट्रा-कारपोरेट ट्रांसफरीज' का कोटा 20 प्रतिशत से बढ़ाकर 50 प्रतिशत कर दिया गया है। टेंडर के आधार पर सेवा प्रदान करने वाली कंपनियों के लिए समय की अवधि को 90 दिनों से बढ़ाकर दो साल कर दिया गया है। आइटी, बिजनेस सर्विसेज, आडियो-विजुअल, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में भारतीय कंपनियां अब ओमान में 100 प्रतिशत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश कर सकेंगी। एफटीए लागू होने के बाद भारत के उत्पाद और सेवा निर्यात ओमान में बढ़ सकेंगे और भारत का प्रतिकूल व्यापार असंतुलन कम होगा। ओमान के आधुनिक बंदरगाहों के उपयोग से पूर्वी यूरोप तक माल पहुंचाने में लगने वाले समय और खर्च में भारी कमी आएगी, जिससे भारतीय निर्यातकों की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता भी बढ़ेगी।

मोदी सरकार के दौरान मारीशस, संयुक्त अरब अमीरात और आस्ट्रेलिया के साथ एफटीए पर प्रगति हुई है। एक अक्टूबर से भारत और चार यूरोपीय देशों आइसलैंड, स्विट्जरलैंड, नार्वे और लिंचेस्टाइन के समूह यूरोपियन फ्री ट्रेड एसोसिएशन (एफ्टा) के बीच भी एफटीए लागू हो गया है और एफ्टा देशों को निर्यात बढ़ने लगे हैं। इसी क्रम में भारत और ब्रिटेन का एफटीए भी महत्वपूर्ण है। अब नए वर्ष 2026 में अमेरिका, यूरोपीय यूनियन पेरू, चिली, आसियान, मेक्सिको, कनाडा, दक्षिण अफ्रीका, इजरायल, भारत-गल्फ कंट्रीज काउंसिल सहित अन्य प्रमुख देशों-पक्षों के साथ भी एफटीए आकार लेते हुए दिखाई देंगे। इन देशों के साथ एफटीए में सिर्फ उत्पाद निर्यात ही शामिल नहीं होंगे, वरन सेवा सेक्टर परिदृश्य से संबंधित निर्यात भी शामिल होंगे। चूंकि सेवा निर्यात में भारत की विशेषज्ञता बढ़ती जा रही है, इसलिए जहां भारत के प्रशिक्षित श्रमिकों एवं पेशेवरों के लिए एफटीए वाले देशों में काम के मौके बढ़ेंगे, वहीं भारत की सेवा निर्यात से कमाई की ऊंची संभावनाएं बढ़ेंगी।

भारत के लिए एफटीए के लाभों के मद्देनजर एक अप्रैल से लागू होने वाले नए श्रम कानून मील का पत्थर साबित होंगे। केंद्र सरकार ने जिन बहुप्रतीक्षित चार नई श्रम संहिताओं को अधिसूचित किया है, उनसे श्रमिकों के साथ उद्योग-कारोबारों को भी राहत मिलेगी। ये श्रम कानून स्वतंत्रता के बाद से सबसे व्यापक और प्रगतिशील श्रम-उन्मुख सुधार हैं। नए श्रम कानून भविष्य के लिए एक ऐसे इकोसिस्टम का निर्माण करेंगे, जो श्रमिकों के अधिकारों की रक्षा करेगा और इससे उद्योग-कारोबार को एफटीए के अधिकतम लाभ हासिल होने की उम्मीद बनी है।

नए वर्ष 2026 में भारत दुनिया के प्रमुख देशों के साथ एफटीए को तेजी से आकार देने की डगर पर आगे बढ़ेगा। उम्मीद करें कि नए साल में होने वाले एफटीए भारत को निर्यात, सेवा, निवेश, तकनीकी सहयोग और पेशेवरों की आवाजाही की नई आर्थिक शक्ति बनाते हुए देश को वर्ष 2027 तक दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था और वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने की डगर पर आगे बढ़ाएंगे।

प्रेरणा

खुद की महिमा, खुद का जयघोष और तालियों से बेपरवाह महानता

कभी मोहल्लों में झगड़े होते थे तो लोग चुपचाप सुलझा लेते थे, और कभी कोई बीच में कूद पड़ता था तो उसका नाम बरसों तक याद रखा जाता था। आज हालात थोड़े बदल गए हैं। अब झगड़ा सुलझाने से ज़्यादा ज़रूरी हो गया है, उसका ऐलान करना। हमारे मोहल्ले के अस्सी बरस के अंकल इसी नए ज़माने के सबसे जीवंत उदाहरण हैं। उम्र भले ही अस्सी पार कर चुकी हो, लेकिन आत्मविश्वास अब भी जवान है—इतना जवान कि खुद की तारीफ़ करने के लिए किसी और की ज़रूरत ही नहीं।

पिछले दिनों अंकल ने पूरे मोहल्ले में घोषणा कर दी कि उन्होंने राम और श्याम की बचपन से चली आ रही लड़ाई बंद करवा दी है। घोषणा इतनी दमदार थी कि सुनने वाले पल भर को चौंक गए। लेकिन हकीकत का दुस्साहस देखिए, न राम ने लड़ाई छोड़ी, न श्याम ने। दोनों पहले की तरह उलझते रहे और एक दिन लड़ते-झगड़ते सीधे अंकल के सामने आ पहुंचे। उन्होंने साफ-साफ कह दिया कि लड़ाई बंद होने की कहानी सिर्फ़ कहानी है। इस पर अंकल ने ज़ोरदार अंग्रेज़ी में समझाया कि दुनिया सिर्फ़ दिखने वाली चीज़ों से नहीं चलती, दुआओं से भी चलती है। उन्होंने दुआ दी, शुभकामनाएं दीं और इसलिए लड़ाई खत्म हो चुकी है—अगर अब भी दिख रही है तो यह सिर्फ़ अभिनय है।

अंकल के भीतर का संत, रणनीतिकार और महान पुरुष एक साथ बोलता है। वे मानते हैं कि दुआ और बददुआ दोनों काम करती हैं, बस देने वाला शानदार, जानदार, रोबदार और ज़ोरदार होना चाहिए। उनका आत्मविश्वास इतना पुख्ता है कि उन्हें यह भी यकीन है कि कोई यह नहीं मानेगा कि कभी इसी लड़ाई को भड़काने में उनकी भूमिका रही होगी। कौन याद रखता है कि किसने कान में क्या कहा, किसने गालियों की सप्लाई करवाई, किसने ईंट-पत्थर और डंडों का इंतज़ाम किया। समाज की याददाश्त बड़ी चयनशील होती है, वह वही याद रखती है जो ज़ोर से और बार-बार बोला जाए।

समय बीता, राम और श्याम की कहानी पुरानी हो गई, लेकिन अंकल की उपलब्धियों की सूची लंबी होती चली गई। अब वे सिर्फ़ एक झगड़े के नहीं, बल्कि डेढ़ दर्जन छोटे-बड़े मोहल्लों के विवाद खत्म करवाने का दावा करने लगे हैं। यह अलग बात है कि उन मोहल्लों में आज भी लोग वैसे ही उलझे हुए हैं, लेकिन घोषणा की दुनिया में सच्चाई की ज़रूरत कहाँ होती है। दुख बस इतना है कि लोग उनके इस महान योगदान की सराहना नहीं कर रहे। न फूल-माला, न तालियाँ, न सम्मान। सब अपने-अपने मोबाइल फोन में डूबे हुए हैं, सोशल मीडिया के चमचमाते बाथटब में बैठे अपनी ही तारीफ़ें गढ़ रहे हैं।

अंकल को इस बात की गहरी पीड़ा है कि दूसरों की तारीफ़ करने का ज़माना बीत गया। अब हर कोई अपनी पीठ खुद थपथपा रहा है। कोई किसी का काम नहीं देखता, कोई किसी की महानता नहीं मानता। जबकि लड़ाई रोकना, झगड़ा खत्म करवाना, युद्ध बंद कराने का दावा करना—ये सब तो मानवता के सबसे ऊँचे काम हैं। ऐसा करने वाला व्यक्ति शांति का मसीहा कहलाने का अधिकारी है। लेकिन पुरस्कार देने वाले, सम्मान बाँटने वाले, चयन करने वाले लोग शायद यह समझ ही नहीं पा रहे कि असली महानता किसे कहते हैं।

इसी पीड़ा से अंकल का जीवन-दर्शन जन्म लेता है। उनका साफ़ मानना है कि खुश रहने का सबसे आसान तरीका है—अपनी तारीफ़ खुद करना। यह इंतज़ार करना ही सबसे बड़ी भूल है कि कोई और आकर सराहेगा। जब दुनिया अपने फोन और अपने प्रोफाइल में उलझी हो, तब उम्मीद करना ही व्यर्थ है। इसलिए खुद ही ऐलान करो, खुद ही महान बनो और खुद ही उस पर विश्वास भी करो।

अंत में अंकल इस निष्कर्ष पर पहुँच चुके हैं कि समय चाहे जितना खराब हो जाए, अच्छे काम करने वाले—या अच्छे काम करने का दावा करने वाले—रुकने वाले नहीं हैं। तारीफ़ मिले या न मिले, सम्मान मिले या न मिले, महानता कम नहीं होती। छोटी-मोटी घटनाएँ, लोगों की बेरुखी या समाज की चुप्पी किसी की घोषित महानता को कम नहीं कर सकती। क्योंकि इस दौर में सबसे बड़ा सम्मान वही है, जो आदमी खुद को दे सके, और सबसे ज़ोरदार जयघोष वही है, जो आदमी खुद अपने लिए कर सके।

जग सिरमौर बनाएं भारत, 'राष्ट्र प्रथम' के ध्येय से ही संभव

जब लोकतंत्र के नाम पर लोक कल्याण का विरोध ही राजनीति हो जाए तो वैसा ही दृश्य उपस्थित होता है जैसा कि इस सप्ताह भारत की संसद में और बाहर देखने को मिला। ग्रामीण भारत की प्रगति तथा आर्थिकी को त्वरा देने हेतु प्रस्तुत एक महत्वाकांक्षी विधेयक 'विकसित भारत - गारंटी फार रोजगार एंड आजीविका मिशन' के गुण-दोष की विवेचना की जगह विपक्ष इसके संक्षिप्त नाम और पूर्वकालीन नाम की तुलना को ही अपने कर्तव्य की पूर्ति के रूप में प्रदर्शित करता रहा। विडंबना यह कि ऐसा उन महात्मा गांधी के नाम पर हुआ, जिनका जीवन लक्ष्य ही समाज के सबसे अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति के आंसू पोंछना था। भाव और भावना का यह बारीक अंतर ही इस संपूर्ण तुलना को 'गांधी विरुद्ध गांधी' बना देता है और याद आते हैं बापू के वे कष्ट भरे शब्द, 'हर कोई मेरी तस्वीरों और मूर्तियों पर माला चढ़ाने को उत्सुक है। कोई भी वास्तव में मेरा अनुसरण नहीं करना चाहता।'

वर्ष 2047 में भारत विदेशी परतंत्रता से मुक्ति के 100 वर्ष पूर्ण करेगा। 78 वर्ष की स्वाधीनता की यात्रा में भारत ने अनेक महत्वपूर्ण पड़ाव देखे हैं। वस्तुतः अंग्रेजी शासन की दासता से मुक्ति के बाद भारत का यात्रा-पथ कठिन, दुरूह, दुर्गम और दुष्कर था। परंतु भारत की शाश्वत, अक्षुण्ण, निरंतर तथा सनातन परंपरा और श्लाघनीय जिजीविषा ने असंभव को संभव कर दिखाया। विभाजन के दंश ने भारत की प्रगतिकामी प्रतिभा को कुंठित नहीं किया। आर्थिक क्षेत्र में भारतीयों की उद्यमशीलता ने अकल्पनीय शुभ-परिणाम प्रस्तुत किए। सात-आठ दशक की अवधि में ही सुई तक न बनाने वाले देश से हम विश्व की प्रथम पांच आर्थिक महाशक्तियों में सम्मिलित हो गए। औद्योगिक क्रांति ने भारतवर्ष के सुदूर क्षेत्रों को भी स्पर्श किया और वैश्विक निर्यात में भारत की सहभागिता निरंतर उल्लेखनीय उत्कर्ष की ओर अग्रसर हो रही है। विश्व भर में तकनीक और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत की उन्नति सम्माननीय बनी है। वैज्ञानिक समाज में भारत के प्रतिभाशाली व्यक्तित्व समादृत हो रहे हैं। अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में भारत ने अकल्पनीय प्रगति की है और हम विश्वभर के देशों के उपग्रह अंतरिक्ष में भेज रहे हैं। चंद्रमा और मंगल के बाद भारत अपने अति-महत्वाकांक्षी आदित्य मिशन की ओर सुदृढ़ पगों से बढ़ रहा है। विश्व व्यापार में भारत प्रमुखता प्राप्त कर रहा है। विभिन्न खेलों में भारत शीर्ष स्थान पर है। सामरिक शस्त्रों और उपकरणों के उत्पादन और निर्माण में आत्मनिर्भरता की ओर जा रहा है।

कृषि क्षेत्र में भारत ने अपने उपयोग हेतु संपूर्ण स्वावलंबन प्राप्त कर दान, अनुदान और विक्रय का मार्ग अपना लिया है। लघु एवं कुटीर उद्योगों को पुनर्जीवन प्राप्त हुआ है। विमानन क्षेत्र में भारत विश्व के विकसित कहे जाने वाले देशों से प्रतिस्पर्धा कर रहा है। चिकित्सा के क्षेत्र में विश्व के अनेक देशों का सर्वाधिक प्रिय और सुरक्षित स्थान भारत ही बनता जा रहा है। विश्व के अनेक उन्नत देशों के बहुराष्ट्रीय वाणिज्य प्रतिष्ठानों में भारतीय मेधा से संयुक्त तथा भारतीय उच्च शिक्षा संस्थानों में प्रशिक्षित व्यक्ति नेतृत्व और शीर्षस्थ भूमिका में दृष्टिगोचर हो रहे हैं। अनेकानेक देशों में भारतीय उद्योगपतियों ने प्रमुख निर्माण तथा उत्पादन उपक्रमों को स्थापित किया है। अंतरराष्ट्रीय संगठनों एवं मंचों पर भारत का स्वर अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो गया है। समस्त विश्व में संघर्ष निवारण के अवसरों पर भारत की भूमिका और भारत से अपेक्षा में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। भारत के नेतृत्व को वैश्विक मान्यता, सम्मान प्रतिष्ठा तथा महत्ता प्राप्त हो रही है। यह वस्तुतः भारत के सर्वतोमुखी उदय का काल है। भारतोदय की गाथा इस समय विश्व का सर्वप्रमुख विमर्श है।

2047 में विकसित भारत के पावन संकल्प के पूर्णकाम होने के मार्ग में अनेक चुनौतियां भी उपस्थित हैं, जिनकी उपेक्षा करना दुस्साहस होगा। सभ्य, कुलीन, नागरिक, शिक्षित, संपन्न तथा प्रतिष्ठित कहे और समझे जाने वाले कतिपय समूहों, व्यक्तियों, संस्थाओं और संगठनों में अभी भी औपनिवेशिक दासता और भारत के प्रति हीनता की मानसिकता अतिव्याप्त है और इससे मुक्ति पाने की राह सबसे कठिन है। भारत की सांस्कृतिक एवं बौद्धिक परंपरा के प्रति उपेक्षा, उपहास तथा सायास दूरी का भाव अभी भी शिक्षा, ज्ञान और विद्या के केंद्रों में सशक्त और समर्थ रूप से विद्यमान है। आधुनिकता को पाश्चात्यीकरण का पर्याय मान चुके बुद्धिजीवियों और कथित आधुनिकों की पश्चिमी संस्कृति, सभ्यता, इतिहास, प्रतीक, पुस्तक, लेखक, विचार, उत्सव, पर्व, वेशभूषा, आहार, जीवनशैली आदि के प्रति श्रेष्ठता और अनुकरणीयता निरंतर वर्धमान हो रही है। इस दुष्चक्र में भारतीय समाज के प्रत्येक वर्ग तथा क्षेत्र के अनवरत फंसते जाने का सत्य हम स्वीकार कर चुके हैं। इससे पार पाना सरल नहीं है। भारतीयकरण के हमारे अनेक प्रयास अनायास ही पाश्चात्य दृष्टि तथा प्रणाली के मूर्खतापूर्ण अनुकरण में परिवर्तित हो जाते हैं और यह भी एक विचलित करने वाली प्रवृत्ति है। हमेशा की भांति भारतवर्ष में आंतरिक विघ्नसंतोषी भी निरंतर क्रियाशील हैं, जो किसी व्यक्ति, दल, नेता से अपनी असहमति को निजी घृणा के स्तर तक ले जाकर उसे राष्ट्र के प्रति निष्ठा की अनुपस्थिति में रूपांतरित कर बठते हैं। राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं के चलते राष्ट्र के संसाधनों को बिना श्रम, बिना प्रयोजन, बिना कारण अमर्यादित रूप से बांटकर चुनावी लाभ लेने की दुष्प्रवृत्ति भी सार्वजनिक स्वीकृति और सहज मान्यता प्राप्त करती जा रही है, जो अत्यधिक चिंता का विषय है। विकसित भारत की यात्रा के कंटक कष्टदायक शूल न बनने पाएं- इसके लिए सभी दिशाओं से समग्र और समवेत प्रयत्न अपेक्षित हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में भारत लगभग 200 वर्ष की मानसिक दासता की शृंखलाओं को छिन्न-भिन्न करने को उद्यमरत है। भारतीयता का समावेश राष्ट्रीय शिक्षा नीति का सर्वाधिक प्रशंसनीय प्रस्थान बिंदु है। औपनिवेशिक दासत्व से उत्पन्न हीनता-ग्रंथि से छुटकारा पाने की लालसा सर्वत्र प्रसरित हो रही है। भारत आगामी दो दशक में पुनः विश्वगुरु बनने की कल्पना को क्रियात्मकता के पंख लगा रहा है। भारतवर्ष की स्वाधीनता के 100 वर्ष पूर्ण होते समय एक समर्थ, सक्षम, समृद्ध, स्वस्थ भारत का स्वप्न यथार्थ में परिवर्तित होने जा रहा है। भारत अपनी जकड़न से बाहर निकल रहा है और विश्व-जगत में अपनी सार्थक, सकारात्मक तथा प्रभावशाली उपस्थिति अंकित कराने को उत्सुक है। भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनना है। यह किसी सरकार, किसी सत्ता, किसी राजनेता, किसी राजनीतिक दल, किसी प्रशासनिक अभिकरण अथवा किसी समूह का विषय नहीं रह गया है।

अभियान

सोमवार का पावन रहस्य: भोलेनाथ को प्रसन्न करने का सरल मार्ग और अटूट कृपा का विधान

हिंदू धर्म में सप्ताह का प्रत्येक दिन किसी न किसी देवता को समर्पित है, लेकिन सोमवार का स्थान सबसे अलग और विशेष माना गया है। यह दिन देवों के देव महादेव, भगवान शिव को समर्पित है, जिन्हें भोलेनाथ, शंकर, नीलकंठ और आशुतोष जैसे नामों से भी जाना जाता है। मान्यता है कि भगवान शिव ऐसे देवता हैं जो आडंबर से नहीं, बल्कि सच्ची श्रद्धा और निर्मल भावना से शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं। कहा जाता है कि जहां अन्य देवताओं की उपासना में विधि-विधान और अनेक सामग्री की आवश्यकता होती है, वहीं भगवान शिव केवल एक लोटा जल अर्पित करने से ही भक्त पर अपनी कृपा बरसा देते हैं। यही कारण है कि उन्हें 'आशुतोष' कहा जाता है, अर्थात शीघ्र प्रसन्न होने वाले देव।

सोमवार के दिन भगवान शिव की पूजा और व्रत का विशेष महत्व है। विशेष रूप से महिलाएं और अविवाहित कन्याएं मनचाहा वर पाने, सुखी वैवाहिक जीवन और योग्य जीवनसाथी की प्राप्ति के लिए सोमवार का व्रत रखती हैं। मान्यताओं के अनुसार, जो भक्त सच्चे मन से सोमवार के दिन भगवान भोलेनाथ का पूजन करता है, उसके जीवन से कष्ट, बाधाएं और नकारात्मक ऊर्जा दूर हो जाती हैं। शिव भक्ति केवल सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मन को शांति, आत्मा को स्थिरता और जीवन को संतुलन प्रदान करती है।

धार्मिक विश्वासों के अनुसार, सोमवार के दिन प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में उठकर स्नान-ध्यान करना अत्यंत शुभ माना जाता है। शुद्ध शरीर और शांत मन से शिवलिंग पर जल, दूध या गंगाजल अर्पित करने से विशेष पुण्य की प्राप्ति होती है। पूजा के समय स्वच्छ और हल्के रंगों के वस्त्र जैसे सफेद, हरा, पीला, लाल या आसमानी रंग धारण करना शुभ माना गया है। ये रंग शांति, पवित्रता और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक माने जाते हैं, जो भगवान शिव को अत्यंत प्रिय हैं। पूजन के दौरान भगवान शिव को अक्षत यानी साबुत और अखंड चावल अर्पित करने का विशेष महत्व बताया गया है। ध्यान रखना चाहिए कि चावल टूटे हुए न हों, क्योंकि खंडित वस्तुएं पूजा में अशुभ मानी जाती हैं। इसके साथ ही सोमवार के दिन दही, दूध, सफेद वस्त्र और शक्कर का दान करना अत्यंत पुण्यदायी माना गया है। मान्यता है कि इस प्रकार का दान करने से भगवान भोलेनाथ शीघ्र प्रसन्न होते हैं और भक्त के जीवन में सुख, समृद्धि और स्थायित्व प्रदान करते हैं। सोमवार के दिन शिव रक्षा स्तोत्र का पाठ करना भी अत्यंत फलदायी माना गया है। यह स्तोत्र न केवल नकारात्मक शक्तियों से रक्षा करता है, बल्कि मानसिक भय, रोग और बाधाओं को भी दूर करता है। ऐसा विश्वास है कि शिव रक्षा स्तोत्र का नियमित पाठ करने से शिव कृपा सदा बनी रहती है और जीवन में आने वाले संकट स्वतः ही शांत होने लगते हैं। इसके अतिरिक्त, मान्यता है कि सोमवार की संध्या के समय कच्चे चावल में काले तिल मिलाकर दान करना विशेष फल देता है। यह उपाय विशेष रूप से शनि दोष, मानसिक तनाव और आर्थिक समस्याओं से राहत दिलाने वाला माना जाता है। धार्मिक ग्रंथों और लोकमान्यताओं के अनुसार, यह छोटा सा उपाय भगवान शिव के साथ-साथ अन्य ग्रह बाधाओं को भी शांत करता है। कुल मिलाकर सोमवार का दिन केवल पूजा-पाठ का नहीं, बल्कि आत्मचिंतन, संयम और श्रद्धा का दिन है। भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए दिखावे या बड़े अनुष्ठानों की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि एक सच्चा मन, शुद्ध भावना और अडिग विश्वास ही पर्याप्त है। जब भक्त पूरे विश्वास के साथ भोलेनाथ का स्मरण करता है, तो वे अपने भक्त की हर मनोकामना पूर्ण करते हैं और जीवन को सुख, शांति और संतुलन से भर देते हैं।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH

अटल नेतृत्व, अविरत विकास

गुजरात में सुशासन से स्टार्टअप्स को मिली नई ऊँचाई : SSIP 2.0 तथा i-Hub बने गेम चेंजर

- स्टूडेंट स्टार्टअप एंड इनोवेशन पॉलिसी 2.0 : पिछले 4 वर्ष में राज्य सरकार द्वारा 1,543 स्टार्टअप्स को मिली सहायता
- i-Hub के माध्यम से राज्य के लगभग 620 स्टार्टअप्स को मार्गदर्शन, इनक्यूबेशन तथा सहायता मिली
- स्टार्टअप क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण : WEstart पहल अंतर्गत 196 महिला-संचालित स्टार्टअप्स को सहायता
- i-Hub में इनक्यूबेटेड स्टार्टअप्स द्वारा राज्य में लगभग 1,400 कुशल रोजगार का सृजन, इन स्टार्टअप्स की कुल मार्केट वैल्यू 3,500 करोड़ रुपए से भी अधिक
- गुजरात सरकार की ओर से 15 लाख रुपए के अनुदान की सहायता से मनन बैटरीवाला ने स्थापित की 'कीपसेक ऑटोमेशन' कंपनी

गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी दृढ़तापूर्वक मानते हैं कि नवीन विचारों, टेक्नोलॉजी आधारित सॉल्यूशन्स तथा युवा उद्यमियों की शक्ति देश के सर्वांगीण विकास का आधार हैं और विकसित भारत@2047 के निर्माण में स्टार्टअप तथा इनोवेशन महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने इस बात को आत्मसात करते हुए राज्य में स्टार्टअप को व्यापक प्रोत्साहन दिया है और राज्य में स्टूडेंट स्टार्टअप एंड इनोवेशन पॉलिसी 2.0 (SSIP 2.0) जैसी पहल के जरिये उद्यमिता क्षेत्र में सुशासन का उत्तम उदाहरण प्रस्तुत किया है। आज गुजरात उद्यमिता के केन्द्र के रूप में उभरा है और लगातार चौथी बार स्टार्टअप रैंकिंग में अग्रसर बना है। इतना ही नहीं; केन्द्र सरकार के स्टार्टअप इंडिया प्रोग्राम में गुजरात देश में बेस्ट परफॉर्मर स्टेट है और राज्य में अनुमानित 16,700 स्टार्टअप कार्यरत हैं। गुजरात में उद्यमिता को प्रोत्साहन देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा, "युवा अपना बिजनेस शुरू करें और अन्य लोगों के लिए रोजगार का माध्यम बनें; यह क्षमता स्टार्टअप में है। गुजरात ने एक इकोसिस्टम बनाया है, जिसमें WEstart तथा SSIP जैसे कार्यक्रम महिला उद्यमियों को सशक्त बनाते हैं।"

गुजरात स्टार्टअप एंड इनोवेशन हब (i-Hub) द्वारा लगभग 620 स्टार्टअप्स को सीधी सहायता मिली

स्टूडेंट स्टार्टअप एंड इनोवेशन पॉलिसी (SSIP) अंतर्गत गठित गुजरात स्टार्टअप एंड इनोवेशन हब (i-Hub) आज राज्य के इनोवेशन इकोसिस्टम का प्रमुख केन्द्र बन गया है। 5 दिसंबर, 2023 को मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल द्वारा i-Hub के नए भव्य कैम्पस का लोकार्पण किया गया था। i-Hub राज्य में इनोवेशन तथा एंटरप्रिन्योरशिप के लिए कार्यरत सबसे बड़ी सुविधा है; जहाँ सिंगल विंडो सपोर्ट के माध्यम से कानूनी, वित्तीय, तकनीकी एवं योजना संबंधी मार्गदर्शन दिया जाता है। यह सुविधा प्रारंभिक चरण के इनोवेटर्स तथा स्टार्टअप्स को उनके विचारों को सफल उद्योगों के रूप में विकसित करने में सहायता करती है। i-Hub का नया कैम्पस लगभग 1.5 लाख वर्ग फीट क्षेत्र में फैला हुआ है, जो एक साथ लगभग 500 स्टार्टअप्स का समावेश कर सकता है। i-Hub द्वारा अब तक 620 स्टार्टअप्स को सीधी सहायता दी गई है और स्टार्टअप सृजन सीड सपोर्ट योजना अंतर्गत 402 स्टार्टअप्स को 23 करोड़ रुपए से अधिक की

SSIP 2.0 अंतर्गत पिछले 4 वर्ष में 1,543 स्टार्टअप को राज्य सरकार ने दी सहायता

उल्लेखनीय है कि SSIP 2.0 अंतर्गत कुल पाँच वर्ष के लिए 300 करोड़ रुपए आवंटित किए गए हैं, जिसमें प्रति वर्ष 60 करोड़ रुपए का अनुदान आवंटित किया जाता है। इसमें से 30 करड़ रुपए तकनीकी शिक्षा के लिए, 12 करोड़ रुपए i-Hub के लिए, 10 करोड़ उच्च शिक्षा के लिए और 8 करोड़ रुपए स्कूल के लिए आवंटित किए जाते हैं। SSIP 2.0 अंतर्गत 5,684 इनोवेशन को राज्य की 339 संस्थाओं के माध्यम से PoC/प्रोटोटाइप बनाने और 2,296 IPR फाइल करने के लिए समर्थन दिया गया तथा PoC/फंड सपोर्ट अंतर्गत 32.38 करोड़ रुपए से अधिक की सहायता प्रदान की गई है, तो पिछले 4 वर्ष में 1,543 स्टार्टअप्स को SSIP 2.0 अंतर्गत राज्य सरकार की सहायता प्राप्त हुई है।

गुजरात सरकार की ओर से 15 लाख रुपए का अनुदान प्राप्त कर मनन बैटरीवाला बने सफल उद्यमी

i-Hub की सहायता से 'कीपसेक ऑटोमेशन' नामक बड़ी कंपनी स्थापित करने वाले श्री मनन बैटरीवाला कहते हैं, "मैंने अपनी यात्रा की शुरुआत एक फ्रीलांसर के रूप में की थी। उसमें से जब हमने एक कंपनी स्थापित करने का विचार किया, तब i-Hub ने हमें मार्गदर्शन दिया कि कंपनी किस तरह बनाई जाए, उसे आगे किस तरह ले जाया जाए। i-Hub ने कम्प्लायंस या लीगल किसी भी प्रकार की मदद के लिए भी सपोर्ट किया। इसके अतिरिक्त; i-Hub सेंटर की सहायता से हम कंपनी की पहचान स्थापित कर सके और हमने एग्जीबिशन मंच भी प्राप्त किया। आज हमारी कंपनी में 37 लोग काम कर रहे हैं। गुजरात सरकार की ओर से हमें कुल 15 लाख रुपए का अनुदान मिला है। इस सपोर्ट के कारण आज मैं एक सफल उद्यमी बना हूँ।"

गुजरात का मजबूत स्टार्टअप इकोसिस्टम : SSIP 2.0 अंतर्गत विद्यालय स्तर से लेकर उच्च शिक्षा स्तर तक के विद्यार्थियों को मिलती है सर्वग्राही मेंटरशिप

युवाओं को इनोवेशन के लिए सक्षम आधार उपलब्ध हो; इसके लिए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में राज्य सरकार ने पाँच वर्ष (2022-2027) के लिए स्टूडेंट स्टार्टअप एंड इनोवेशन पॉलिसी (SSIP 2.0) घोषित की है। इस पॉलिसी के तहत विद्यालय स्तर से लेकर उच्च शिक्षा स्तर तक के विद्यार्थियों को सृजनशीलता के पंख मिलें; इसके लिए उन्हें उचित मार्गदर्शन, प्रोत्साहन एवं वित्तीय सहायता दी जाती है।

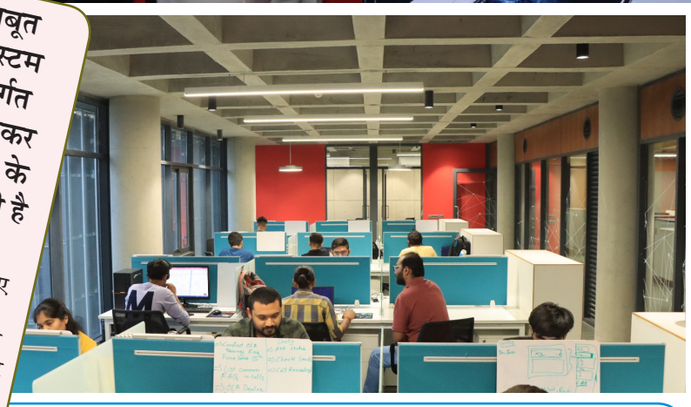

i-Hub के इनक्यूबेटेड स्टार्टअप्स द्वारा 1,400 कुशल रोजगार का सृजन हुआ

i-Hub के इनक्यूबेटेड स्टार्टअप्स द्वारा राज्य में लगभग 1,400 कुशल रोजगार का सृजन हुआ है, जबकि इन स्टार्टअप्स की कुल मार्केट वैल्यू लगभग 3,569 करोड़ रुपए तक पहुँची है। i-Hub के जरिये स्टार्टअप्स को विभिन्न वेंचर फंड्स द्वारा 416 करोड़ रुपए से अधिक का निजी फंड उपलब्ध कराया गया है। इसके साथ; i-Hub ने 20 से अधिक जिलों में हब-एंड-स्पोक मॉडल द्वारा पहुँच बढ़ाई है और 4 लाख से अधिक युवाओं को स्टार्टअप तथा इनोवेशन के विषय में जागृत किया है।

WEstart : महिलाओं को स्टार्टअप क्षेत्र में सशक्त बनाने वाली महत्वपूर्ण पहल

स्टार्टअप क्षेत्र में महिलाओं के समावेश के लिए शुरू की गई WEstart पहल के तहत 196 महिला संचालित स्टार्टअप्स को सहायता दी गई है, जो कुल सपोर्टेड स्टार्टअप्स का लगभग 30 प्रतिशत है। राज्य में स्टार्टअप तथा इनोवेशन क्षेत्र को अधिक मजबूत बनाने के लिए अहमदाबाद में कार्यरत i-Hub के बाद अब आगामी एक वर्ष में वडोदरा, सूरत, राजकोट तथा मेहसाणा में चार नए सेंटर शुरू किए जाएंगे। स्टार्टअप का यह मजबूत इकोसिस्टम 'आत्मनिर्भर गुजरात से आत्मनिर्भर भारत' के विजन में भी उल्लेखनीय योगदान देगा।

अहमदाबाद मंडल के आम्बली रोड स्टेशन पर बनाया जा रहा है "रेल कोच रेस्टोरेंट"

नागरिकों को मिलेगा यात्रा जैसा अनुभव, स्वादिष्ट भोजन और विभिन्न सुविधाएँ

पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल द्वारा आंबली रोड रेलवे स्टेशन पर आधुनिक 'रेल कोच रेस्टोरेंट' का निर्माण किया जा रहा है। इस अनूठी पहल के तहत परिवर्तित रेल कोचों में रेस्टोरेंट विकसित किया जा रहा है, जहाँ बैठकर लोग बिना यात्रा किए ही चलती ट्रेन में होने जैसा अनुभव प्राप्त कर सकेंगे और स्वादिष्ट भोजन का आनंद ले सकेंगे। आंबली रोड स्टेशन पर रेल कोच रेस्टोरेंट अहमदाबाद क्षेत्र का पहला रेस्टोरेंट होगा। पश्चिम रेलवे में बांद्रा टर्मिनस, अंधेरी, बोरीवली, रतलाम तथा राजकोट में रेल कोच रेस्टोरेंट स्थापित किए गए है।

इस रेल कोच रेस्टोरेंट में 24 घंटे सेवा उपलब्ध रहेगी, जिससे यात्रियों के साथ-साथ स्थानीय नागरिकों को भी दिन-रात भोजन की सुविधा मिलेगी। अहमदाबाद की जनता यहाँ परिवार और मित्रों के साथ बैठकर विभिन्न व्यंजनों का स्वाद ले

सकेगी तथा आकर्षक रेल-थीम वातावरण में सेल्फी और यादगार पलों का आनंद उठा सकेगी। इस रेस्टोरेंट में इनडोर एवं आउटडोर डाइनिंग दोनों विकल्प होंगे। इसके साथ ही पर्याप्त पार्किंग, पार्सल/टेक-अवे सुविधा तथा बच्चों के लिए खेलने की व्यवस्था (फन ज़ोन) भी उपलब्ध कराई जाएगी, जिससे यह स्थान परिवार-अनुकूल बन सके। यह रेस्टोरेंट हरियाली से युक्त सुखद वातावरण प्रदान करेगा तथा सभी सुरक्षा मानको का ध्यान रखकर बनाया जा रहा है।

आंबली रोड के अतिरिक्त, महेसाणा, साबरमती, भुज एवं गांधीधाम रेलवे स्टेशनों के सर्कुलेटिंग एरिया में भी 'रेल कोच रेस्टोरेंट' विकसित किए जाने की योजना है।

भारतीय रेलवे के अभिनव दृष्टिकोण के तहत इन संशोधित कोचों में आधुनिक डिजाइन, संलग्न किचन (Attached Kitchens) तथा मल्टी-क्यूज़िन मेनू की सुविधा होगी, ताकि विभिन्न स्वादों की पसंद को पूरा किया जा सके। साथ ही, समग्र अनुभव को और बेहतर बनाने के लिए पर्यावरण-अनुकूल एवं आकर्षक माहौल सुनिश्चित किया जाएगा।

भावनगर मंडल के लोको पायलटों की सतर्कता से 06 सिंहों को ट्रेन की चपेट में आने से बचाया गया

भावनगर रेलवे मंडल द्वारा सिंहों/वन्यजीवों की सुरक्षा के लिए निरंतर प्रभावी प्रयास किए जा रहे हैं। मंडल के निर्देशानुसार ट्रेनों का संचालन करने वाले लोको पायलट निर्धारित गति का पालन करते हुए विशेष सतर्कता के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन कर रहे हैं। भावनगर मंडल के लोको पायलटों की सतर्कता एवं वन विभाग के फॉरेस्ट ट्रैकरों के समन्वय से पिछले वित्तीय वर्ष 2024-25 में कुल 159 सिंहों की जान बचाई जा चुकी है। वहीं, वर्तमान वित्तीय वर्ष 2025-26 में अब तक 81 सिंहों को सुरक्षित बचाया गया है।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि दिनांक 21.12.2025 (रविवार) को लोको पायलट श्री अनीश शेख एवं सहायक लोको पायलट श्री फरमान हुसैन ने सासणगीर–कांसियानेश सेक्शन में किलोमीटर संख्या 112/7–112/6 के बीच रेलवे ट्रैक पर 06 सिंहों को देखा। तत्पश्चात उन्होंने ट्रेन संख्या 52955 वेरावल–जूनागढ़ यात्री गाड़ी को तत्काल इमरजेंसी ब्रेक लगाकर सुरक्षित रूप से रोक लिया। लोको पायलट द्वारा ट्रेन मैनेजर (गार्ड) श्री विद्यानन्द कुमार को तुरंत सूचना दी गई। वन विभाग के फॉरेस्ट ट्रैकर श्री राणा भाई द्वारा सभी सिंहों को सुरक्षित रूप से रेलवे ट्रैक से हटाया गया। स्थिति सामान्य पाए जाने के उपरांत लोको पायलट को ट्रेन के प्रस्थान की अनुमति दी गई, जिसके बाद ट्रेन को सावधानीपूर्वक गंतव्य की ओर रवाना किया गया। इस घटना की जानकारी प्राप्त होने पर लोको पायलटों द्वारा किए गए इस सराहनीय एवं संवेदनशील कार्य के लिए मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा, अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री हिमाँशु शर्मा एवं अन्य अधिकारियों द्वारा प्रशंसा व्यक्त की गई।

घरेलू कलह बना खूनखराबे की वजह, बेटे के हाथों उजड़ा बाप का साया

प्रयागराज। जिले के बारा थाना क्षेत्र से एक दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है, जहां पारिवारिक विवाद ने हिंसक रूप ले लिया और एक बेटे ने अपने ही बुजुर्ग पिता की जान ले ली। शनिवार देर रात हुई इस घटना ने पूरे गांव को स्तब्ध कर दिया है और रिश्तों की मर्यादा पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।

जानकारी के अनुसार पंडित का पूरा गांव निवासी 68 वर्षीय राम बहादुर और उनके बेटे रामबाबू के बीच पशुओं के चारे को लेकर कहासुनी हो गई। मामूली विवाद देखते ही देखते इतना बढ़ गया कि गुस्से में आकर बेटे ने नियंत्रण खो दिया। आरोप है कि रामबाबू ने पास में रखी लाठी उठाकर अपने पिता के सिर पर जोरदार वार कर दिया। अचानक हुए हमले से राम बहादुर गंभीर रूप से घायल होकर जमीन पर गिर पड़े।

परिजनों और ग्रामीणों की मदद से बुजुर्ग को तत्काल अस्पताल पहुंचाया गया, लेकिन सिर में गंभीर चोट लगने के कारण डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। पिता की मौत की खबर फैलते ही गांव में मातम पसर गया और हर कोई इस अमानवीय घटना से स्तब्ध नजर आया।

सूचना मिलते ही बारा थाना पुलिस मौके पर पहुंची और हालात का जायजा लिया। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है, ताकि मौत के सही कारणों की पुष्टि की जा सके। वहीं, आरोपी बेटे के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज कर लिया गया है और उससे पूछताछ की जा रही है। पुलिस का कहना है कि प्रारंभिक जांच में घरेलू विवाद ही घटना की मुख्य वजह सामने आई है, हालांकि हर पहलू से मामले की जांच की जा रही है।

इस घटना ने एक बार फिर यह सोचने पर मजबूर कर दिया है कि पारिवारिक तनाव, गुस्सा और असंयम किस हद तक विनाशकारी हो सकते हैं। जिस पिता ने बेटे को पाल-पोसकर बड़ा किया, उसी बेटे के हाथों उसकी मौत होना समाज के लिए एक गंभीर चेतावनी है। गांव में शोक और भय का माहौल है, वहीं लोग यह सवाल भी कर रहे हैं कि छोटी-छोटी बातों पर बढ़ता गुस्सा आखिर कब रिश्तों को लहूलुहान करना बंद करेगा।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल का योग तथा ध्यान की प्राचीन परंपरा को स्वस्थ संतुलित समाज के निर्माण के लिए जन आंदोलन बनाने का आह्वान

- महात्मा मंदिर में विश्व ध्यान दिवस का उत्साहपूर्ण उत्सव
- गुजरात राज्य योग बोर्ड के योग कोच व ट्रेनर्स का प्रथम दीक्षांत समारोह संपन्न - मुख्यमंत्री ने प्रमाणपत्र प्रदान किए
- हिमालयन समर्पण मेडिटेशन के पूज्य श्री शिवकृपानंद स्वामीजी के पावन सान्निध्य में सामूहिक ध्यान सत्र आयोजित

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने रविवार को योग साधना तथा ध्यान की प्राचीन परंपरा को स्वस्थ व संतुलित समाज निर्माण के लिए जन आंदोलन बनाने का आह्वान किया।

इस संदर्भ में मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिए गए 'विकसित भारत@2047' के लक्ष्य को मन की शांति और स्वस्थ एवं निरोगी जीवनशैली के साथ ध्यान तथा योग से ही समाज तथा राष्ट्र निर्माण द्वारा साकार किया जा सकता है।

मुख्यमंत्री ने अध्यक्षता करते हुए गुजरात राज्य योग बोर्ड के कोच एवं योग ट्रेनर्स के प्रथम दीक्षांत समारोह एवं विश्व ध्यान दिवस समारोह को संबोधित किया।

उन्होंने योग ट्रेनर्स को बधाई देते हुए कहा कि योग शारीरिक शक्ति बढ़ाता है तथा ध्यान मन की एकाग्रता बढ़ाता है। योग करने की शक्ति का संचय ध्यान से प्राप्त होने वाली मजबूत निर्णय शक्ति द्वारा ही होता है। मुख्यमंत्री ने ध्यान को भारत की प्राचीन परंपरा से उपजा हुआ वरदान बताते हुए कहा कि आज के तेज और तनावपूर्ण समय में मानसिक शांति के लिए यह उतना ही प्रासंगिक है।

श्री पटेल ने कहा कि भारत विश्व को आध्यात्मिक मार्गदर्शन देने वाला देश है। उन्होनें गौरवपूर्ण उल्लेख किया कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने योग को जो वैश्विक मान्यता दिलाई; उसके परिणामस्वरूप 21 जून को विश्व योग दिवस के रूप में मनाया जाता है।

उन्होंने जोड़ा कि प्रधानमंत्री ने योग को स्वास्थ्य रक्षा का परंपरागत सरल भाग बताते हुए नियमित योग, प्राणायाम और ध्यान से रोग- बीमारी से मुक्त रहने का उपाय सुझाया है।

उन्होंने 'आयुष्यमान भारत' सुविधा की भूमिका का उल्लेख करते हुए कहा कि 'आयुष्यमान भारत' जैसी स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध है, जिसमें योग के माध्यम से स्वास्थ्य रक्षा के बावजूद यदि किसी को गंभीर बीमारी हो जाए तो उसके उपचार के लिए प्रधानमंत्री द्वारा 'आयुष्मान भारत' योजना दी गई है ।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में योग और ध्यान बिना किसी खर्च या दुष्प्रभाव के एकाग्रता, निर्णय शक्ति और आंतरिक शांति बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री के करकमलों से योग प्रशिक्षकों को प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।

योग बोर्ड के अध्यक्ष श्री शीशपालजी राजपूत ने योग बोर्ड की गतिविधियों, उनकी प्रासंगिकता तथा योग के माध्यम से स्वस्थ राज्य से स्वस्थ राष्ट्र निर्माण में योग प्रशिक्षकों की भूमिका की विस्तृत जानकारी देते हुए सभी का स्वागत किया।

इस अवसर पर गांधीनगर की महापौर श्रीमती मीराबेन पटेल, विधायक श्रीमती रीटाबेन पटेल, हिमालयन समर्पण मेडिटेशन के गुजरात प्रांत के पदाधिकारी, योग ट्रेनर्स व बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित रहे।

विश्व ध्यान दिवस के अवसर पर पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल पर सामूहिक ध्यान सत्र का आयोजन

विश्व ध्यान दिवस के अवसर पर पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल पर 21 दिसंबर 2025 को आर्ट ऑफ लिविंग के अनुभवी प्रशिक्षकों के सहयोग से विभिन्न स्थानों पर सामूहिक ध्यान सत्र का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य रेल कर्मचारियों एवं आम नागरिकों को मानसिक शांति, सकारात्मक सोच तथा आत्मिक संतुलन की ओर प्रेरित करना था, ताकि वे दैनिक जीवन के तनाव और चुनौतियों का सामना अधिक सहजता एवं आत्मविश्वास के साथ कर सकें। वर्तमान समय में बढ़ते वैश्विक तनाव, कार्यस्थल के दबाव तथा मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं को देखते हुए विश्व ध्यान दिवस का महत्व और भी बढ़ जाता है। यह दिवस मानवता को एक क्षण ठहरकर स्वयं से जुड़ने, आंतरिक शांति प्राप्त करने तथा सकारात्मक ऊर्जा को अपनाने का संदेश देता है। ध्यान सत्र के दौरान प्रतिभागियों को ध्यान के वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक महत्व के बारे में जानकारी दी गई। नियमित ध्यान से व्यक्ति में भावनात्मक स्थिरता आती है, आध्यात्मिक विकास को बल मिलता है, तनाव में कमी होती है तथा समाज में सामुदायिक जुड़ाव और आपसी सौहार्द बढ़ता है। उपस्थित प्रतिभागियों ने अनुभव किया कि ध्यान के माध्यम से मन को एकाग्र कर नकारात्मक विचारों

से ऊपर उठकर सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित किया जा सकता है। यह सामूहिक ध्यान सत्र अहमदाबाद मंडल के साबरमती कम्युनिटी सेंटर, विरमगाम कम्युनिटी सेंटर, कांकरिया कम्युनिटी सेंटर तथा गांधीधाम कम्युनिटी सेंटर में आयोजित किया गया, जहाँ बड़ी संख्या में रेल अधिकारियों एवं रेल कर्मचारी ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रशिक्षकों के मार्गदर्शन में सभी प्रतिभागियों ने शांत वातावरण में ध्यान का अभ्यास किया और मानसिक सुकून का अनुभव किया। इस अवसर पर आर्ट ऑफ लिविंग के संस्थापक श्री श्री रविशंकर के प्रेरणादायी विचारों को भी साझा किया गया कि "ध्यान ही वह माध्यम है जिससे नकारात्मक विचारों से ऊपर उठकर सकारात्मकता स्वतः और स्वाभाविक रूप से आती है।" पश्चिम रेलवे का अहमदाबाद मंडल सभी रेल कर्मचारियों से अपील करता है कि वे अपने दैनिक जीवन में ध्यान को अपनाएं तथा ऐसे सामूहिक कार्यक्रमों में सक्रिय सहभागिता करें, जिससे व्यक्तिगत स्वास्थ्य के साथ-साथ कार्यक्षमता, आपसी समन्वय एवं सामाजिक सद्भाव को भी मजबूती मिल सके।

कच्छ में अपराध के नेटवर्क पर बड़ी चोट, गोदारा बॉक्सर गिरोह का कुख्यात शार्पशूटर दबोचा गया

गुजरात। संगठित अपराध के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत गुजरात एटीएस और कच्छ पूर्वी पुलिस को बड़ी सफलता हाथ लगी है। संयुक्त कार्रवाई में रोहित गोदारा–नवीन बॉक्सर गिरोह से जुड़े एक सक्रिय शार्पशूटर को कच्छ जिले के रापर कस्बे से गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तार आरोपी की पहचान हरियाणा के काकरोली निवासी विकास उर्फ गोलू शेओरान के रूप में हुई है, जो लंबे समय से फरार था और हरियाणा पुलिस के लिए वांटेड बना हुआ था।

अधिकारियों के मुताबिक, एटीएस को खुफिया जानकारी मिली थी कि उत्तर भारत में कई संगीन अपराधों में शामिल यह शार्पशूटर गुजरात के कच्छ क्षेत्र में छिपा हुआ है। इसी इनपुट के आधार पर कच्छ पूर्वी पुलिस के साथ मिलकर सुनियोजित कार्रवाई की गई और रापर कस्बे में छापेमारी कर शेओरान को दबोच लिया गया। पूछताछ में सामने आया है कि वह कुख्यात रोहित गोदारा–नवीन बॉक्सर गिरोह का सक्रिय सदस्य है, जो उत्तर भारत में रंगदारी, हत्या और हथियारों की सप्लाई जैसे अपराधों के लिए जाना जाता है।

जांच एजेंसियों के अनुसार, विकास उर्फ गोलू शेओरान हरियाणा के रोहतक निवासी

लवजीत की हत्या में सीधे तौर पर शामिल था। यह सनसनीखेज वारदात चार सितंबर को हरियाणा के भिवानी शहर में अदालत परिसर के भीतर हुई थी, जहां दिनदहाड़े लवजीत को बेहद करीब से गोलियां मारकर मौत के घाट उतार दिया गया था। इस हत्याकांड में शेओरान के साथ उसके साथी अजय और रोहित भी शामिल थे। पुलिस का दावा है कि वारदात में इस्तेमाल किए गए हथियार गिरोह के सरगना रोहित गोदारा ने ही मुहैया कराए थे।

हत्या के बाद से ही यह शार्पशूटर अपने गिरोह के आकाओं के निर्देश पर भूमिगत हो गया था और लगातार ठिकाने बदल रहा था। इसी दौरान वह गुजरात के रापर इलाके में शरण लेकर छिपा हुआ था, ताकि पुलिस की पकड़ से बच सके। भिवानी के एक पुलिस थाने में इस हत्याकांड को लेकर रोहित गोदारा–नवीन बॉक्सर गिरोह के कई सदस्यों के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज है, और पुलिस लंबे समय से उनकी तलाश में जुटी थी।

इस कार्रवाई के दौरान पुलिस ने रापर निवासी दिनेश उर्फ काली गर्ग को भी हिरासत में लिया है। प्रारंभिक जांच में उसके गिरोह को पनाह देने और सहयोग करने की भूमिका की आशंका जताई जा रही है। दोनों आरोपियों को आगे की गहन पूछताछ और कानूनी प्रक्रिया के लिए हरियाणा एसटीएफ के हवाले कर दिया गया है।

पुलिस अधिकारियों का कहना है कि इस गिरफ्तारी से गोदारा–बॉक्सर गिरोह की गतिविधियों पर बड़ा असर पड़ेगा और उत्तर भारत में फैले इस संगठित अपराध नेटवर्क की परतें खोलने में मदद मिलेगी। साथ ही, इससे अंतरराज्यीय अपराध पर नकेल कसने की दिशा में एक अहम कामयाबी मानी जा रही है।

अमरेली में जंगल से गांव तक दहशत, तेंदुए के हमले ने छीनी मासूम की सांस

अमरेली। गुजरात के अमरेली जिले में एक बार फिर तेंदुए के आतंक ने पूरे इलाके को दहशत में डाल दिया है। धारी कस्बे के गोपालग्राम गांव में रविवार सुबह खेतों के पास तेंदुए के हमले में एक मजदूर के पांच वर्षीय बेटे की दर्दनाक मौत हो गई। इस हृदयविदारक घटना के बाद गांव में भय और आक्रोश का माहौल है, जबकि वन विभाग ने तेंदुए को पकड़ने के लिए इलाके में कई पिंजरे लगा दिए हैं और सघन तलाश अभियान शुरू कर दिया है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, रविवार सुबह करीब नौ बजे मजदूर परिवार खेतों की ओर जा रहा था। बच्चा अपनी मां के पीछे-पीछे चल रहा था, तभी खेत में छिपकर बैठे तेंदुए ने अचानक उस पर हमला कर दिया। पलक झपकते ही तेंदुआ मासूम को जबड़े में दबाकर खेतों की ओर घसीट ले गया। मां और आसपास मौजूद लोगों के शोर मचाने पर तेंदुआ बच्चे को छोड़कर जंगल की ओर भाग गया, लेकिन तब तक बच्चा गंभीर रूप से घायल हो चुका था।

घटना के तुरंत बाद परिजन और ग्रामीण बच्चे को लेकर सरकारी अस्पताल पहुंचे, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मासूम की मौत की खबर फैलते ही गांव में कोहराम मच गया। ग्रामीणों का कहना है कि पिछले कुछ समय से इलाके में तेंदुए की आवाजाही देखी जा रही थी, लेकिन ठोस कदम न उठाए जाने के कारण आज यह दर्दनाक हादसा हुआ।

सहायक वन संरक्षक प्रताप चंदू ने बताया कि घटना की सूचना मिलते ही वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची और पूरे क्षेत्र का मुआयना किया गया। तेंदुए की गतिविधियों पर नजर रखने के लिए कैमरा ट्रैप लगाए जा रहे हैं और उसे पकड़ने के लिए कई पिंजरे भी स्थापित कर दिए गए हैं। ग्रामीणों से अपील की गई है कि वे बच्चों को अकेले बाहर न भेजें और खेतों व जंगल से सटे इलाकों में विशेष सावधानी बरतें।

दमन-दानह में पोलियो मुक्त भविष्य की ओर बड़ा कदम, पल्स पोलियो अभियान के तहत घर-घर पहुंची स्वास्थ्य टीमें

दमन। दमन-दानह में रविवार से राष्ट्रीय पल्स पोलियो टीकाकरण अभियान की औपचारिक शुरुआत हो गई है, जिसके तहत शून्य से पांच वर्ष तक के सभी बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाई जा रही है। स्वास्थ्य विभाग द्वारा चलाए जा रहे इस व्यापक अभियान का उद्देश्य पोलियो जैसी घातक बीमारी को जड़ से समाप्त करना और भविष्य में इसके किसी भी नए मामले को रोकना है। प्रशासन और स्वास्थ्य अधिकारियों का कहना है कि भले ही देश में पोलियो के मामलों में भारी कमी आई है, लेकिन बीमारी के पूर्ण उन्मूलन के लिए सतर्कता और निरंतर टीकाकरण बेहद जरूरी है।

अभियान के पहले दिन से ही जिले के शहरी, ग्रामीण और दूर-दराज के इलाकों में स्वास्थ्यकर्मियों और स्वयंसेवकों की टीमें सक्रिय रूप से मैदान में उतर गई हैं। ये टीमें घर-घर जाकर बच्चों को पोलियो ड्रॉप्स पिला रही हैं, ताकि कोई भी बच्चा टीकाकरण से वंचित न रह जाए। इसके साथ ही बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन, बाजार, भीड़भाड़ वाले चौराहों और अन्य सार्वजनिक

स्थानों पर विशेष पोलियो बूथ भी लगाए गए हैं, जहां आने-जाने वाले परिवार अपने बच्चों को आसानी से खुराक पिला सकें।

स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों ने बताया कि इस अभियान के लिए पहले से ही व्यापक योजना बनाई गई है। प्रत्येक क्षेत्र में जिम्मेदार टीमों की तैनाती की गई है और निगरानी व्यवस्था को भी मजबूत किया गया है, ताकि अभियान प्रभावी ढंग से पूरा हो सके। आशा कार्यकर्ता, आंगनवाड़ी सेविकाएं, स्वयंसेवी संगठन और जनप्रतिनिधि भी इस अभियान में सक्रिय सहयोग कर रहे हैं। प्रशासन का मानना है कि सामूहिक प्रयास से ही पोलियो जैसी बीमारी को पूरी तरह समाप्त किया जा सकता है।

स्वास्थ्य विभाग ने अभिभावकों से अपील की है कि वे किसी भी प्रकार की भ्रांति या लापरवाही से बचें और अपने बच्चों को पोलियो की खुराक अवश्य पिलवाएं। अधिकारियों ने स्पष्ट किया कि पोलियो ड्रॉप्स पूरी तरह सुरक्षित हैं और बच्चों के शारीरिक व मानसिक विकास के लिए आवश्यक हैं। उन्होंने यह भी कहा कि एक भी बच्चा अगर टीकाकरण से छूट जाता है, तो बीमारी के दोबारा फैलने का खतरा बना रहता है। यह अभियान राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत राज्य सरकार के सहयोग से संचालित किया जा रहा है और इसका लक्ष्य दमन-दानह को स्थायी रूप से पोलियो मुक्त बनाए रखना है। स्वास्थ्य विभाग ने भरोसा जताया है कि जनता के सहयोग से यह अभियान सफल होगा और आने वाली पीढ़ियों को पोलियो के खतरे से पूरी तरह सुरक्षित किया जा सकेगा।

भारतीय रेल का सीमित किराया संशोधन, आम यात्रियों पर न्यूनतम असर के साथ 26 दिसंबर से लागू होगा नया ढांचा

नई दिल्ली। भारतीय रेल ने यात्रियों के हितों को ध्यान में रखते हुए किराया संरचना में बेहद सीमित और संतुलित बदलाव करने का निर्णय लिया है, जो 26 दिसंबर 2025 से प्रभावी होगा। रेलवे प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि इस संशोधन का सीधा असर आम और दैनिक यात्रियों पर नहीं पड़ेगा। उपनगरीय रेल सेवाओं, मासिक सीजन टिकटों और 215 किलोमीटर तक की छोटी दूरी की साधारण यात्राओं के किराए में किसी प्रकार का कोई बदलाव नहीं किया गया है, जिससे रोज़मर्रा की यात्रा करने वाले लाखों यात्रियों को राहत मिलेगी।

रेलवे के अनुसार, किराए में यह संशोधन केवल लंबी दूरी की यात्राओं तक सीमित रखा गया है। साधारण श्रेणी की लंबी दूरी की यात्रा में प्रति किलोमीटर केवल 1 पैसे की बढ़ोतरी की गई है, जबकि मेल और एक्सप्रेस ट्रेनों की नॉन-एसी और एसी

श्रेणियों में प्रति किलोमीटर 2 पैसे की मामूली वृद्धि लागू होगी। रेलवे ने उदाहरण देते हुए बताया कि यदि कोई यात्री 500 किलोमीटर की नॉन-एसी यात्रा करता है, तो उसे अब महज 10 रुपये अतिरिक्त चुकाने होंगे, जो मौजूदा महंगाई और लागत के अनुपात में बेहद न्यूनतम है।

रेलवे अधिकारियों का कहना है कि यह कदम यात्रियों पर बोझ डालने के बजाय वित्तीय संतुलन बनाए रखने की दिशा में उठाया गया है। इस सीमित किराया वृद्धि से चालू वित्त वर्ष में रेलवे को लगभग 600 करोड़ रुपये की अतिरिक्त आय होने का अनुमान है, जिसका उपयोग बुनियादी ढांचे, सुरक्षा व्यवस्था और सेवा गुणवत्ता में सुधार के लिए किया जाएगा। बीते कुछ वर्षों में रेलवे नेटवर्क के विस्तार, नई ट्रेनों के संचालन और आधुनिक सुविधाओं के कारण कर्मचारियों और पेंशन से जुड़े खर्चों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। वर्तमान में रेलवे का कर्मचारी व्यय करीब 1.15 लाख करोड़ रुपये और पेंशन पर खर्च लगभग 60,000 करोड़ रुपये तक पहुंच चुका है। इसके साथ ही, वित्त वर्ष 2024-25 में कुल परिचालन लागत बढ़कर 2.63 लाख करोड़ रुपये हो गई थी।

रेलवे ने यह भी स्पष्ट किया है कि उसकी प्राथमिकता यात्रियों की सुरक्षा, समयबद्ध संचालन और सेवाओं की दक्षता बढ़ाने पर बनी हुई है। इसके साथ ही माल ढुलाई को बढ़ावा देकर राजस्व के वैकल्पिक स्रोतों को मजबूत करने पर जोर दिया जा रहा है, ताकि भविष्य में यात्रियों पर किराया बढ़ाने का दबाव कम से कम पड़े। हाल ही में त्योहारों के मौसम के दौरान 12,000 से अधिक विशेष और नियमित ट्रेनों का सफल संचालन रेलवे की बढ़ती परिचालन क्षमता और बेहतर प्रबंधन का उदाहरण माना जा रहा है।

कुल मिलाकर, रेलवे का यह फैसला संतुलन साधने की कोशिश के रूप में देखा जा रहा है, जिसमें एक ओर वित्तीय जरूरतों को ध्यान में रखा गया है, तो दूसरी ओर आम यात्रियों को किसी बड़े आर्थिक बोझ से बचाने का प्रयास किया गया है।

ममता को बंधक बनाने की हैवानियत, पत्नी को लौटाने के लिए पिता ने मासूम बेटी की सांसें छीन लीं

राजस्थान के अलवर जिले से सामने आई यह घटना इंसानियत को झकझोर देने वाली है, जहां एक पिता ने रिश्तों की सारी मर्यादाएं तोड़ते हुए अपनी ही दस साल की बेटी की बेरहमी से हत्या कर दी। वजह यह थी कि उसकी पत्नी उससे नाराज होकर मायके चली गई थी और वह किसी भी हाल में उसे वापस घर बुलाना चाहता था। इस अंधे जुनून में उसने ऐसा खौफनाक रास्ता चुना, जिसकी कल्पना भी रूह को सिहरा देती है।

घटना प्रतापगढ़ थाना क्षेत्र के एक गांव की है। 18 दिसंबर की सुबह चौथी कक्षा में पढ़ने वाली मासूम बच्ची रोज की तरह बकरियां चराने के लिए घर से निकली थी। किसी को अंदाजा नहीं था कि यह उसकी जिंदगी का आखिरी सफर होगा। पुलिस जांच में सामने आया कि उसी समय बच्ची का पिता उसके पीछे-पीछे गया और गांव से करीब 400 मीटर दूर झाड़ियों में ले जाकर उसका गला दबा दिया। हत्या इतनी निर्मम थी कि बच्ची की गर्दन की हड्डी तक टूट

गई। इसके बाद आरोपी पिता मौके से फरार हो गया। जब शाम तक बच्ची घर नहीं लौटी तो गांव में हलचल मच गई। खोजबीन के दौरान उसका शव झाड़ियों में मिला। मासूम की मौत की खबर फैलते ही पूरे गांव में शोक और आक्रोश का माहौल बन गया। शुरुआत में आरोपी पिता सवालों से बचता रहा और इधर-उधर की बातें करता रहा, लेकिन गांव वालों को उसके व्यवहार पर शक होने लगा। इसी बीच बच्ची की मां को भी घटना की सूचना दी गई।

पुलिस जांच में धीरे-धीरे परतें खुलती चली गईं। पूछताछ में सामने आया कि आरोपी और उसकी पत्नी के बीच लंबे समय से पारिवारिक विवाद चल रहा था। वह पत्नी पर शक करता था और इसी बात को लेकर आए दिन झगड़े होते थे। पत्नी का आरोप है कि आरोपी नशे का आदी है और पहले भी कई बार उसके साथ मारपीट कर चुका है। करीब एक हफ्ते पहले तंग आकर पत्नी उसे छोड़कर मायके चली गई थी।

आरोपी पत्नी को वापस लाने के लिए ससुराल भी गया था, लेकिन वहां से उसे साफ मना कर दिया गया और वह खाली हाथ लौट आया। यहीं से उसके दिमाग में एक खौफनाक साजिश ने जन्म लिया। उसने सोचा कि अगर बेटी की मौत हो जाएगी तो पत्नी दुख और सदमे में टूट जाएगी और मजबूर होकर वापस उसके पास लौट आएगी। इसी बीमार मानसिकता के चलते उसने अपनी ही बेटी की बलि दे दी। पुलिस के अनुसार बच्ची पहले से ही कमजोर और कुपोषित थी। उसकी मासूमियत और बेबसी ने भी आरोपी के पत्थर दिल को नहीं पिघलाया। जब गांव वालों को बच्ची की मौत की जानकारी मिली तो आरोपी का व्यवहार और ज्यादा संदिग्ध हो गया। ग्रामीणों ने बच्ची की मां को फोन कर बुलाया। मां जब मायके से गांव लौट रही थी, तभी रास्ते में आरोपी मिला। लोगों का शक और गहरा हो गया और उन्होंने उसे पकड़ लिया।

बच्ची के ताऊ ने भी खुले तौर पर पिता पर शक जताया। इसके बाद पुलिस ने आरोपी को हिरासत में लेकर सख्ती से पूछताछ की, तो उसने अपना जुर्म कबूल कर लिया। शुक्रवार को पुलिस ने उसे औपचारिक रूप से गिरफ्तार कर लिया। यह मामला न सिर्फ एक जघन्य हत्या का है, बल्कि उस मानसिक विकृति का भी आईना है, जिसमें एक पिता अपनी पत्नी को नियंत्रित करने के लिए अपनी ही संतान को मौत के घाट उतार देता है।

अलवर की यह घटना समाज के सामने कई सवाल छोड़ जाती है—क्या रिश्तों में अविश्वास और नशे की लत इंसान को इतना निर्दयी बना सकती है कि वह अपने ही खून से हाथ रंग ले? मासूम बच्ची की मौत अब एक पिता की क्रूरता और एक टूटे परिवार की भयावह कहानी बनकर रह गई है, जिसे गांव ही नहीं, पूरा समाज लंबे समय तक भूल नहीं पाएगा।

घने कोहरे ने थाम दी हवाई रफ्तार, दिल्ली एयरपोर्ट पर उड़ानों का पहिया हुआ जाम

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में रविवार को घने कोहरे और बेहद कम दृश्यता ने हवाई यातायात को बुरी तरह प्रभावित कर दिया। इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर दिनभर अफरा-तफरी का माहौल रहा, जहां मौसम की मार के चलते 97 उड़ानों को रद्द करना पड़ा, जबकि 200 से अधिक उड़ानें देरी से संचालित हुईं। यात्रियों को औसतन करीब 23 मिनट तक अतिरिक्त इंतजार करना पड़ा, जिससे एयरपोर्ट पर लंबी कतारें और असहज स्थिति बनी रही। हवाई अड्डा सूत्रों के अनुसार, खराब मौसम का सबसे ज्यादा असर सुबह के समय देखने को मिला। घने कोहरे के कारण दृश्यता बेहद कम हो गई, जिससे विमानों की सुरक्षित लैंडिंग और टेकऑफ में दिक्कत आई। इस दौरान 48 आगमन और 49 प्रस्थान उड़ानें रद्द करनी पड़ीं। कई यात्रियों की कनेक्टिंग फ्लाइट्स छूट गईं, जबकि कुछ यात्रियों को आखिरी समय में अपनी यात्रा योजनाएं बदलनी पड़ीं।

स्थिति की गंभीरता को देखते हुए एयरलाइन कंपनियों ने यात्रियों से लगातार फ्लाइट

स्टेटस की जांच करने की अपील की। देश की सबसे बड़ी एयरलाइन इंडिगो ने अपने यात्रियों के लिए विशेष एडवाइजरी जारी करते हुए बताया कि दिल्ली के अलावा बेंगलुरु और अमृतसर में भी कोहरे की वजह से उड़ान शेड्यूल प्रभावित हुआ है। एयरलाइन ने कहा कि मौसम की स्थिति पर लगातार नजर रखी जा रही है और यात्रियों से अनुरोध किया गया है कि वे एयरपोर्ट पहुंचने से पहले अपनी उड़ान की ताजा जानकारी अवश्य लें।

दिल्ली इंटरनेशनल एयरपोर्ट लिमिटेड (डीआईएलएल) ने भी यात्रियों को सतर्क करते हुए कहा कि मौसम में सुधार के संकेत मिलने के बाद दोपहर के समय उड़ान संचालन धीरे-धीरे सामान्य होने लगा। हालांकि, सुबह के असर के चलते पूरे दिन शेड्यूल पूरी तरह पटरी पर नहीं लौट सका। एयरपोर्ट प्रबंधन ने यात्रियों से अपील की कि वे यात्रा से पहले ऑनलाइन माध्यम से फ्लाइट की स्थिति की पुष्टि करें और अतिरिक्त समय लेकर एयरपोर्ट पहुंचे, ताकि असुविधा से बचा जा सके।

कोहरे के कारण बार-बार उड़ानों में हो रही देरी और रद्दीकरण ने एक बार फिर सर्दियों के मौसम में हवाई यात्रा की चुनौतियों को उजागर कर दिया है। मौसम विभाग के अनुसार, आने वाले दिनों में भी सुबह और देर रात कोहरे की स्थिति बनी रह सकती है, ऐसे में यात्रियों को सतर्क रहने और यात्रा से पहले पूरी जानकारी जुटाने की सलाह दी जा रही है।

भारत-नेपाल सीमा पर नार्को-आतंक का पर्दाफाश सेना का भगोड़ा जवान रक्सौल से दबोचा गया

पूर्वी चंपारण। भारत-नेपाल अंतरराष्ट्रीय सीमा से सटे बिहार के रक्सौल क्षेत्र में सुरक्षा एजेंसियों को बड़ी कामयाबी हाथ लगी है। यहां पंजाब पुलिस की स्टेट स्पेशल ऑपरेशन सेल ने स्थानीय हरैया थाना पुलिस के सहयोग से एक ऐसे खतरनाक नेटवर्क का भंडाफोड़ किया है, जिसमें नशा तस्करी, आतंक और जासूसी की परतें एक साथ जुड़ी हुई थीं। इस कार्रवाई में भारतीय सेना से फरार एक जवान और उसके करीबी सहयोगी को गिरफ्तार किया गया है, जिनके तार सीधे पाकिस्तान समर्थित नार्को-टेरर नेटवर्क से जुड़े बताए जा रहे हैं।

पंजाब पुलिस के महानिदेशक गौरव यादव ने बताया कि एसएसओसी मोहाली की टीम को खुफिया इनपुट मिले थे कि सेना से फरार राजबीर सिंह उर्फ फौजी भारत-नेपाल सीमा के रास्ते देश से बाहर भागने की फिराक में है। इसी सूचना के आधार पर रक्सौल में जाल बिछाया गया और उसे दबोच लिया गया। गिरफ्तारी के वक्त उसके पास से 500 ग्राम हेरोइन और एक हैंड ग्रेनेड बरामद हुआ, जिसने इस मामले की गंभीरता को और बढ़ा दिया। जांच एजेंसियों का मानना है कि आरोपी नेपाल के रास्ते यूरोप भागने की तैयारी में था।

इससे पहले पुलिस उसके सहयोगी चिराग को गिरफ्तार कर चुकी थी, जो पंजाब के फाजिल्का जिले की काशी राम कॉलोनी

का रहने वाला है। चिराग के पास से 407 ग्राम हेरोइन और एक 9 एमएम पिस्टल बरामद की गई थी। पूछताछ में सामने आया कि चिराग, राजबीर के लिए कूरियर की भूमिका निभा रहा था और नशीले पदार्थों की सप्लाई से लेकर आर्थिक लेनदेन तक में उसकी अहम जिम्मेदारी थी। दोनों मिलकर नशे की खेपों को आगे पहुंचाने और आतंकी गतिविधियों के लिए संसाधन जुटाने का काम कर रहे थे।

जांच में यह भी सामने आया है कि राजबीर सिंह ने वर्ष 2011 में भारतीय सेना जॉइन की थी, लेकिन फरवरी 2025 में वह ड्यूटी से फरार हो गया। इसके बाद उसका नाम अमृतसर ग्रामीण के घरिंडा थाने में दर्ज एक जासूसी मामले में सामने आया, जिसमें उस पर आधिकारिक गोपनीयता अधिनियम के तहत केस दर्ज किया गया था। सुरक्षा एजेंसियों के अनुसार, सेना में रहते हुए मिली संवेदनशील जानकारियों का उसने गलत इस्तेमाल किया और उन्हें नशा तस्करी के बदले पाकिस्तानी हैंडलरों तक पहुंचाया।

पूछताछ में यह भी खुलासा हुआ है कि दोनों आरोपी हरियाणा के सिरसा स्थित महिला पुलिस थाने पर हुए ग्रेनेड हमले की साजिश में भी शामिल थे। आरोप है कि राजबीर और चिराग ने इस हमले के लिए हैंड ग्रेनेड उपलब्ध कराए थे, जिन्हें अमृतसर ग्रामीण निवासी गुरजंत सिंह के जरिए इस्तेमाल किया गया। गुरजंत को हरियाणा पुलिस पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है, जबकि इस हमले के लिए आर्थिक मदद भी चिराग के माध्यम से पहुंचाई गई थी।

एसएसओसी की एआईजी डी सुदरविझी के अनुसार, राजबीर वर्ष 2022 में इंटरनेट मीडिया के जरिए पाकिस्तानी हैंडलरों के संपर्क में आया था। धीरे-धीरे उसका सीधा संबंध पाकिस्तान आधारित आतंकी-तस्कर नेटवर्क से स्थापित हो गया। बदले में हेरोइन की खेपों तक पहुंच और आर्थिक लाभ के लिए वह सैन्य ठिकानों, गतिविधियों और अन्य संवेदनशील जानकारियों को साझा करता रहा। इतना ही नहीं, उसने कुछ अन्य सैन्य कर्मियों को भी इन हैंडलरों से मिलवाने की कोशिश की।

मामला उजागर होने के बाद वह नेपाल में छिप गया और वहीं से पंजाब और नेपाल के बीच आवाजाही करते हुए नशा तस्करी का नेटवर्क चलाता रहा। जांच एजेंसियों को इनपुट मिले हैं कि पाकिस्तानी हैंडलर उसे नेपाल के रास्ते यूरोप भेजने की योजना बना रहे थे, ताकि वह वहां से इस नेटवर्क को और मजबूत कर सके। फिलहाल पंजाब पुलिस आरोपी राजबीर सिंह को ट्रांजिट रिमांड पर पंजाब लाने की तैयारी कर रही है, जहां उससे गहन पूछताछ के बाद इस पूरे नार्को-आतंक और जासूसी नेटवर्क की और परतें खुलने की उम्मीद है।

आईटी दिग्गजों की चमक से बाजार में भरोसे की वापसी, छह बड़ी कंपनियों की संपत्ति में 75 हजार करोड़ से ज्यादा का इजाफा

बीते सप्ताह भारतीय शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव के बावजूद चुनिंदा दिग्गज कंपनियों के मजबूत प्रदर्शन ने निवेशकों को राहत दी। खास तौर पर आईटी सेक्टर की दिग्गज कंपनियों टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) और इन्फोसिस में आई तेजी ने बाजार की दिशा को सहारा दिया, जिसका असर यह रहा कि देश की छह सबसे बड़ी कंपनियों के कुल बाजार पूंजीकरण में करीब 75,257 करोड़ रुपये की बढ़ोतरी दर्ज की गई। वैश्विक संकेतों, डॉलर की चाल और घरेलू आर्थिक आंकड़ों के बीच निवेशकों का रुझान चुनिंदा मजबूत शेयरों की ओर बना रहा। इस दौरान टीसीएस सबसे ज्यादा लाभ में रही। कंपनी का बाजार मूल्य 22,595 करोड़ रुपये बढ़कर 11,87,673 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। आईटी सेक्टर में स्थिर मांग, बड़े ऑर्डर और दीर्घकालिक ग्रोथ को लेकर भरोसे ने टीसीएस के शेयरों को मजबूती दी। वहीं, इन्फोसिस के शेयरों में भी उल्लेखनीय तेजी देखने को मिली और उसका बाजार पूंजीकरण 16,972 करोड़ रुपये बढ़कर 6,81,192 करोड़ रुपये हो गया। निवेशकों का मानना है कि वैश्विक अनिश्चितताओं के बावजूद भारतीय आईटी कंपनियां डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन और नई तकनीकों के दम पर आगे भी बेहतर प्रदर्शन कर सकती हैं।

बैंकिंग और कॉरपोरेट सेक्टर में भी कुछ बड़े नामों ने बाजार को सहारा

दिया। भारतीय स्टेट बैंक का बाजार मूल्य 15,923 करोड़ रुपये बढ़कर 9,04,739 करोड़ रुपये हो गया, जो बैंकिंग सेक्टर में निवेशकों के भरोसे को दर्शाता है। रिलायंस इंडस्ट्रीज, जो पहले से ही देश की सबसे मूल्यवान कंपनी है, उसके बाजार मूल्य में 12,315 करोड़ रुपये की बढ़ोतरी दर्ज की गई और यह 21,17,967 करोड़ रुपये तक पहुंच गया। टेलीकॉम सेक्टर में भारती एयरटेल ने भी मजबूती दिखाई और उसका बाजार मूल्य 7,384 करोड़ रुपये बढ़कर 11,95,332 करोड़ रुपये हो गया। इंजीनियरिंग और इंफ्रास्ट्रक्चर क्षेत्र की दिग्गज कंपनी लार्सन एंड टुब्रो के बाजार मूल्य में भी मामूली सही, लेकिन 69 करोड़ रुपये की बढ़त दर्ज की गई और यह 5,60,439 करोड़ रुपये पर पहुंच गया।

हालांकि, इस सकारात्मक तस्वीर के बीच कुछ बड़ी कंपनियों को नुकसान भी उठाना पड़ा। एचडीएफसी बैंक का बाजार मूल्य 21,920 करोड़ रुपये घटकर 15,16,639 करोड़ रुपये रह गया, जो बैंकिंग शेयरों में आई दबाव की स्थिति को दर्शाता है। बीमा क्षेत्र की दिग्गज कंपनी एलआईसी का बाजार पूंजीकरण 9,614 करोड़ रुपये घटकर 5,39,206 करोड़ रुपये पर आ गया। इसी तरह आईसीआईसीआई बैंक के बाजार मूल्य में 8,428 करोड़ रुपये की गिरावट दर्ज की गई और यह 9,68,241 करोड़ रुपये रह गया। एनबीएफसी सेक्टर की प्रमुख कंपनी बजाज फाइनेंस को भी नुकसान झेलना पड़ा और उसका बाजार मूल्य 5,880 करोड़ रुपये घटकर 6,27,266 करोड़ रुपये पर सिमट गया।

सप्ताह के अंत में कंपनियों के कुल बाजार मूल्य के आधार पर रिलायंस इंडस्ट्रीज एक बार फिर सबसे महंगी कंपनी बनी रही। इसके बाद एचडीएफसी बैंक, भारती एयरटेल, टीसीएस, आईसीआईसीआई बैंक, भारतीय स्टेट बैंक, इन्फोसिस, बजाज फाइनेंस, लार्सन एंड टुब्रो और एलआईसी का स्थान रहा। हालांकि व्यापक बाजार की बात करें तो बीएसई सेंसेक्स सप्ताह के अंत में 338.3 अंक यानी 0.39 प्रतिशत की गिरावट के साथ बंद हुआ। इसके बावजूद चुनिंदा बड़ी कंपनियों में आई मजबूती ने यह संकेत दिया कि बाजार में पूरी तरह निराशा का माहौल नहीं है और मजबूत बुनियादी कंपनियों में निवेशकों का भरोसा अभी कायम है।

कुल मिलाकर, यह सप्ताह बाजार के लिए मिश्रित रहा, जहां एक ओर सूचकांकों में कमजोरी दिखी, वहीं दूसरी ओर आईटी और कुछ बड़े कॉरपोरेट शेयरों की मजबूती ने निवेशकों को यह भरोसा दिया कि सही सेक्टर और सही कंपनी चुनने पर अब भी बेहतर रिटर्न की संभावनाएं बनी हुई हैं।